अभिव्यक्ति

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

तेरहवां अंक
सितंबर 2021

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अभिव्यक्ति

अंक- तेरहवां, वर्ष- 2021 (डिजिटल संस्करण)

संरक्षक

विवेक खनेजा

संपादक

डॉ. आरती नूर

सुनीता अरोड़ा

सह संपादक

डॉ. चन्द्र मोहन

ओम प्रकाश शर्मा

कवर डिजाइन एवं डिजिटल संस्करण

अमिय मोहंती

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62, नोएडा- 201309

फोन: 0120-2210800, ई-मेलः hindicellnoida@cdac.in

इस अंक में

तकनीकी लेख

1.	साइबर क्लोसेट साइबर हमलों से बचाव सिखाने वाला साइबर जिम	वी. के. शर्मा, डॉ. आरती नूर	7
2.	राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन: सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और समावेशिता हेतु एक डिजिटल पहल	प्रवीण श्रीवास्तव	11
3.	ब्लॉकचेन तकनीक	बबिता	15
4.	ऑपरेटिंग सिस्टम	विक्रम सूद	20
5.	SEO क्या है?	अमिय मोहंती	22
6.	बिग डाटा का विवरण	बबिता	25

गैर-तकनीकी लेख

7.	हमारे लक्ष्य और मानवीय ऊर्जा	राजेन्द्र सिंह	29
8.	जल जीवन मिशन	ओम प्रकाश शर्मा	31
9.	तीसरी लहर के दर्शन को बेचैन आत्माएं	अनिल कुमार	33
10.	हृदय-परिवर्तन	संजय कुमार	34
11.	कबीर दास जी के दोहे	नीरू शर्मा	36
12.	डिजिटल स्ट्रेस से राहत देगा 20-5-3 का ये नियम	अनिल कुमार	38
13.	स्वच्छ भारत अभियान	अमिय मोहंती	39
14.	गलतफहमी	भुबन दास	42
15.	भ्रष्टाचार का मूल	अनिल कुमार	44
16.	मानव के डर से मुक्ति	मणिकांत राय	45

कविता, कहानी

17.	जिंदगी	राजेन्द्र सिंह	46
18.	कोरोना काल में हिंदी	नितेश	50
19.	क्योंकि अखबार तो अखबार होता है	नीरू शर्मा	51
20.	जय जवान	चंद्र मोहन	52

21.	दोस्त दुश्मन	राजेन्द्र सिंह	53
22.	झाँसी की मर्दानी वो झाँसी की रानी	बबिता	55
23.	एक सुबह होगी	नवीन चन्द्र	57
24.	मेरी नन्ही परी मेरी प्यारी सी बेटी	आजाद अली	58
25.	शिलालेख हो तुम	मनजीत कुमार	59
26.	प्यारे बादल	सईद अनवर जमाल अंसारी	60
27.	काम आए केवल सरकारी	ओम प्रकाश शर्मा	61
28.	आजादी का अमृत महोत्सव	अमिय मोहंती	62
29.	ये जिंदगी	आजाद अली	63
30.	सैनिक की दास्ताँ	ओम प्रकाश शर्मा	64

राजभाषा कॉर्नर

31.	सी-डैक, नोएडा में राजभाषा कार्यान्वयन : एक रिपोर्ट	नवीन चन्द्र	65

चित्र दीर्घा 68

श्रद्धांजलि 69

♦♦♦

संरक्षक की कलम से

संदेश

जैसाकि आपको विदित है कि भारत एक विशाल देश है। यहाँ अनेक भाषाएं और उप भाषाएं बोली जाती हैं। यहाँ के बारे में एक प्रसिद्ध कहावत है "कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी"। इसी विविधत्ता को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने देश को एक सूत्र में बांधने और विचारों के आदान-प्रदान के लिए भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। आज हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अत: अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना और इसको निरन्तर बढ़ावा देना हम सभी का मौलिक कर्तव्य है। हिन्दी के प्रति कर्मचारियों में जागरूकता बढ़ाने और मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए हमारे केंद्र द्वारा वर्ष 2009 से निरंतर वार्षिक गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का प्रकाशन किया जा रहा है।

"अभिव्यक्ति" के 13वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गर्व एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हमारी संस्था के अधिकारियों और कर्मचारियों में सृजनात्मकता का अभाव नहीं है। हमारे उभरते रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बहुमूल्य विचारों एवं अभिव्यक्ति की क्षमता का सराहनीय प्रदर्शन किया है। मेरा विश्वास है कि ऐसी पत्रिकाएं राजभाषा के प्रगामी प्रयोग तथा इसके उत्तरोतर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती हैं। मैं इन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 13वें अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

मुझे आशा है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा और आप अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमें अवगत कराएंगे ताकि पत्रिका के आगामी अंकों को निरंतर आपकी आशाओं के अनुरूप बना सकें।

(विवेक खनेजा)
कार्यकारी निदेशक
सी-डैक, नोएडा

♦♦♦

संपादकीय

हिन्दी भाषा हमारी स्वाधीनता का प्रतीक है। इस भाषा में स्वदेशी शासन का भाव प्रदर्शित होता है। हिन्दी हमारे स्वदेशी विचारों, पहनावे एवं सामाजिक जीवन शैली की संवाहक है। इस रूप में हिन्दी भाषा राष्ट्रीय पहचान एवं गौरव के रूप में स्थापित है। हिन्दी देश की एकता का प्रतीक भी है। यह 'एक देश एक संपर्क भाषा' के सूत्र का परिचायक भी है। यही कारण है कि देश को एक सूत्र में पिरोने वाली सशक्त संपर्क भाषा हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने का निर्णय हमारे संविधान निर्माताओं ने लिया। अत: अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना हमारा परम कर्तव्य है। इन्हीं प्रयासों को अग्रसर करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार एवं विकास की दिशा में इस केंद्र द्वारा वर्ष 2009 से गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का अनवरत प्रकाशन किया जा रहा है। इसी क्रम में इस पत्रिका का 13वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। जो इस दिशा में हमारे सतत प्रयासों और प्रतिबद्धता का सूचक है।

तकनीकी संस्थान होने के बावजूद भी हम संघ सरकार की राजभाषा नीति के सुचारू एवं सफल कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। पूर्व की भांति इस वर्ष भी सभी आदेश, विज्ञापन, निविदा सूचनाएं, पत्राचार, कार्यालय टिप्पणियां और पुस्तकालय के लिए हिन्दी पुस्तकों की खरीद निर्धारित लक्ष्य के अनुसार करके आदेशों का पालन सुनिश्चित किया है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करने के लिए हमारे केंद्र को राजभाषा शील्ड और प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित किया है।

हम अपने कार्यकारी निदेशक श्री विवेक खनेजा के आभारी हैं, जिन्होंने गृह पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए मार्गदर्शन करते हुए हमें प्रोत्साहित किया। इस पत्रिका में प्रस्तुत लेख एवं रचनाएँ कर्मचारियों के हिन्दी में चिन्तन एवं सोच की परिचायक हैं। आशा है कि गृह पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा। "अभिव्यक्ति" के आगामी अंकों को रोचक बनाने के लिए आपके मूल्यवान सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का हमें इन्तजार रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ,

- संपादक

♦♦♦

तकनीकी लेख

साइबर क्लोसेट-साइबर हमलों से बचाव सिखाने वाला साइबर जिम

- वी. के. शर्मा, वरिष्ठ निदेशक
- डॉ. आरती नूर, वरिष्ठ निदेशक

हमारा देश आधुनिक तकनीकियों के साथ विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर हो रहा है। सरकार द्वारा लगातार अथक प्रयास किए जा रहे हैं कि आधुनिक सुख सुविधाएँ केवल शहरों तक सीमित न रहें, बल्कि देश के प्रत्येक कोने-कोने और आम आदमी तक इनकी पहुँच हो। यह सब डिजिटलीकरण (digitalization) के द्वारा ही संभव हो पा रहा है। वर्तमान में भारत में 1.1 बिलियन मोबाइल, 730 मिलियन इंटरनेट एवं 44.8 मिलियन सोशल मीडिया उपभोक्ता हैं। आज वीडियो संचार (कम्युनिकेशन) के द्वारा मनुष्य मीलों दूर बैठे हुए इस प्रकार जुड़े हैं, जैसे हम सब एक परिवार की तरह साथ रहते हैं।

यह सब नई तकनीकियों की खोज या अनुसंधान के साथ-साथ मौजूदा महत्वपूर्ण आधारभूत अवसरंचना (क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर) के नवीनीकरण से संभव हो पाया है। महत्वपूर्ण आधारभूत अवसरंचना (क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर) से यहां अभिप्राय उस अवसरंचना से है जो किसी भी देश को समाज के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं बिना किसी रोक-टोक के सुचारू रूप से चलाने व सुरक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक हैं, जैसे परिवहन, स्वास्थ्य, उर्जा, पानी, तेल एवं गैस, दूरसंचार, कृषि, वित्त क्षेत्र, सुरक्षा सेवाएं, सरकारी आपातकालीन सेवाएं इत्यादि। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के स्तर का आंकलन उपरोक्त सेवाओं की उपलब्धता से किया जाता है। इन सब महत्वपूर्ण आधारभूत अवसरंचना (क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर) का स्तर नई-नई तकनीकों के आविष्कार के साथ निरंतर बदल रहा है। भौतिक (फिजिकल) और डिजिटल को मिलाकर इन्हें नया रूप दिया जा रहा है, इसके फलस्वरूप इनके प्रदर्शन (परफॉरमेंस) में वृद्धि तो हो ही रही है, साथ ही इन्हें मॉनिटर करना भी आसान हो रहा है।

साधारणतय नई तकनीकों की खोज मानव जीवन को आरोग्य, सरल व सुविधाओं से संपन्न करने के लिए की जाती है। अगर संक्षिप्त में कहें तो यही मानव कल्याण व उन्नति का मुख्य उद्देश्य होता है। परन्तु इसके विपरीत आजकल कुछ लोग इन तकनीकियों का उपयोग निमित्त अपनी

आजादी, सत्ता/शक्ति, समृद्धि व बदला लेने के लिए करते हैं। साइबर हमले (अटैक) उनमें से एक उदाहरण हैं। साइबर हमलों के द्वारा ना केवल व्यक्तिगत या संगठन, बल्कि पूरे देश की अर्थव्यवस्था को नष्ट किया जा सकता है। Kaspersky Telemetry रिपोर्ट के अनुसार मार्च, 2020 से, कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान, पाशविक बल हमले (brute force attacks) 93.1 मिलियन से फ़रवरी, 2021 तक बढ़कर 277.4 मिलियन हो गए। अगर सिर्फ भारत की बात करें तो जनवरी-फरवरी, 2021 में 15 मिलियन साइबर हमले किए गए हैं। यह संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है और इस संख्या के निरंतर बढ़ने की संभावना है, क्योंकि कोविड-19 के दौरान वर्क फ्रॉम होम, ऑनलाइन टीचिंग एवं दूसरी ऑनलाइन गतिविधियां पहले की तुलना में काफी अधिक हो रही हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में लोग मोबाइल, लैपटॉप, डेस्कटॉप व इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए यह अति आवश्यक है कि हम अपने सिस्टम की कमजोरियों को चाहे हार्डवेयर (HW) या सॉफ्टवेयर (SW) से संबंधित हों, जिसे साइबर हमलावर अपना निशाना बना सकते हैं, उन्हें पहचाने और उनका मूल्यांकन करें और इसके लिए दीर्घकालीन सुरक्षा रणनीति की योजना बनाएं।

इतनी बड़ी संख्या में साइबर हमलों को रोकने के लिए प्रमुख समस्या है विश्व भर में आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त प्रशिक्षित जनशक्ति की कमी होना। International Information System Security Certification Consortium (ISC)^2 के अनुसार विश्व भर में 3.5 मिलियन प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता है। इनमें से सिर्फ भारत में वर्ष 2021 के लिए 70,000 लोग क्रिटिकल स्किल के चाहिए और यह आवश्यकता नित नए साइबर अटैक बढ़ने के साथ लगातार बढ़ती जा रही है।

साइबर क्लोसेट (Cyber CLOSET)- Collaborative comprehensive live Cyber operation specific exercise training Environment for Indian Space) शिक्षण एवं प्रशिक्षण समूह Education and Training group की एक अनोखी पहल है जिसे MeitY द्वारा प्रायोजित किया गया और सर्ट-इन (CERT-In) की देख रेख में तैयार किया गया है। प्रशिक्षित जनशक्ति की कमी (GAP) को कम करने व प्रक्षिशित जनशक्ति विकास के लिए साइबर क्लोसेट एक प्रकार का जिम है, जिसमें 60 से अधिक साइबर टूल्स हैं तथा एक आर्किटेक्चर बनाया गया है, जिसमें राऊटर, स्विचसेस, फायरबाल्स सर्वर सिस्टमस, अलग- अलग ओएस, डमी वेबसाइटस (बैंक, कैफ़े आदि) मिलाकर एक अलग तरह का एनवायरनमेंट तैयार किया गया है। इसे किसी भी संगठन की आवश्यकता के अनुसार अनुकूलित (कस्टमाइज्ड) किया जा सकता है। यह नियंत्रित वातावरण (कंट्रोल्ड एनवायरनमेंट) Hyper Conversion Infrastructure (HCI), सॉफ्टवेयर परिभाषित

नेटवर्क (SDN) एंड क्लाउड का प्रयोग करके बनाया गया है, जिसमें लगभग 300 वर्चुअल मशीन बनाई जा सकती हैं, दो VLAN नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है। हैंड्स ऑन प्रैक्टिस के लिए लगभग 300 real attack परिदृश्य (scenarios) तैयार किए गए हैं। ये परिदृश्य नेटवर्क, वेब एप्लीकेशन, क्लाउड व मोबाइल सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। इसमें सभी प्रकार के साइबर हमले, जैसे सोशल इंजीनियरिंग हमले, मैलवेयर हमले, ब्राउज़र शोषण (exploitation), मैन इन द मिडिल, डेटाबेस हमले, फिशिंग हमले, क्रॉस साइट स्क्रिप्टिंग, पाशविक बल का प्रयोग करके हमले करना (brute force attacks), RDP अटैक्स, बैंकिंग धोखाधड़ी, SQL इंजेक्शन अटैक्स, android एप्लीकेशन हमले, SMSing हमले, क्लाउड VM हाईजेकिंग और अनाधिकृत पहुंच, एफटीपी, सर्वर हमले आदि सामिल हैं।

हैंड्स ऑन ट्रेनिंग के लिए चार टीम काम करती हैं:

1. **रेड टीम**: इसका कार्य लाइव अटैक करना है।
2. **ग्रीन टीम**: यह टीम ट्रेनिंग देती है। अटैक होने के बाद क्या होता है तथा इससे कैसे बचाव करें व अटैक न हो, यह सब सिखाने का कार्य ग्रीन टीम का होता है।
3. **वाइट टीम**: यह टीम ट्रेनिंग के दौरान सारे प्रोसेस को देखती है और अपने एक्सपर्ट कमेंट्स देती है।
4. **ब्लू टीम**: प्रतिभागी जो ट्रेनिंग में भाग ले रहे हैं।

इस ट्रेनिंग के लिए एक विशेष विधि (स्पेशल मेथोड़ोलोजी) प्रयोग की जाती है। ट्रेनिंग से पूर्व सभी प्रतिभागियों के साथ मीटिंग करके उनके संगठन की अवसंरचना (आर्किटेक्चर) को समझा जाता है, जैसे कि उनके नेटवर्क में क्या घटक (कॉम्पोनेन्ट) हैं, किस हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर तथा एप्लीकेशन का प्रयोग कर रहे हैं इत्यादि। फिर क्लोसेट टीम उस अवसंरचना (आर्किटेक्चर) की कमज़ोरियों की भेद्यता (vulnerabilities) की पहचान करती है तथा परिदृश्यों (scenarios) को बनाती है। ट्रेनिंग के दौरान इन परिदृश्यों पर चर्चा की जाती है, इससे बचने के लिए क्या स्टेप्स हैं, क्या बेस्ट प्रैक्टिसेज हैं, यह भी बताया जाता है। इसके पश्चात सब प्रतिभागी हैंड्स ऑन प्रैक्टिस करते हैं, इसके लिए क्लोसेट टीम VMS तैयार करती है तथा रियल टाइम में VMs पर हमला किया जाता है। प्रतिभागियों से उसे पहचानने तथा उसके बाद डिफेंड करने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार प्रतिभागी रियल टाइम में हुए हमले से बचाव करना सीखते हैं। ट्रेनिंग के अंतिम भाग में साइबर ड्रिल करते हैं, जिसमें प्रतिभागी को बिना बताए उसकी VM पर हमला करके प्रतिभागियों को हमले की पहचान करने, उसका बचाव तंत्र (Defend mechanism) क्या

है, रिपोर्ट के साथ प्रस्तुत करना होता है। वाइट टीम (White team) इस पूरी प्रक्रिया का अवलोकन करके अंत में ग्रीन व ब्लू टीम की शुद्धता (accuracy) व प्रतिरोधी उपायों (counter measures) के बारे में फीड बैक देती है।

इस तरह साइबर क्लोसेट के ट्रेनिंग एनवायरनमेंट द्वारा प्रतिभागियों को अनुभव कराया जाता है व तैयार किया जाता है कि उनके संगठन में क्या कमजोरियां एवं भेद्यताएं (vulnerabilities) हैं और भविष्य में क्या सावधानियां बरती जाएं ताकि साइबर हमलों से बचा जा सके।

साइबर क्लोसेट में अभी तक विभिन्न महत्वपूर्ण अवसंरचना (क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर) संगठनों से संबंधित लगभग 1400 कर्मचारियों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है। इन संगठनों में आसूचना ब्यूरो (Intelligence Bureau), राष्ट्रीय महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र (NCIIPC), दूरसंचार विभाग, अस्पताल और स्वास्थ्य प्रदाताओं के लिए राष्ट्रीय बोर्ड (NABH), सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF), भारत संचार निगम लिमिटेड, टाटा पावर, इंडियन आयल कारपोरेशन, भारतीय गैस प्राधिकरण (गेल), रक्षा मंत्रालय, आर्डिनेंस फैक्ट्री, पंजाब पुलिस, नौसेना, दिल्ली मेट्रो रेल निगम, बैंक व एमआईटी और संबंधित संस्थायें आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सर्ट-इन (CERT-In) के साथ मिलकर लगभग छः दिनों में पावर सैक्टर के 450 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया है। MeitY और PRSG ने इस प्रोजेक्ट की बहुत सराहना की है। साइबर क्लोसेट प्रोजेक्ट ने एसोचैम (ASSOCHEM) साइबर इनफ्लूएन्सर का अवार्ड भी जीता है।

साइबर क्लोसैट को सफल बनाने में इस टीम के अधिकारी व कर्मचारी डॉ. सुनीता प्रसाद, डॉ. लक्ष्मी कल्याणी, श्रीमती रेखा सारस्वत, स्व. डॉ. नेहा बाजपेयी, श्री दिव्यांस पांडे, श्री बलराम रेक्सवाल, कुमारी ज्योति पाठक, कुमारी काजल कश्यप, कुमारी दीक्षा अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भविष्य में साइबर क्लोसेट को एक “सी-डैक साइबर रेंज प्रोडक्ट” की तरह बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सकें।

♦♦♦

तकनीकी लेख

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन: सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और समावेशिता हेतु एक डिजिटल पहल

- प्रवीण श्रीवास्तव
वरिष्ठ निदेशक

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एन.डी.एच.एम.) का उद्देश्य देश के एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे को सपोर्ट करने के लिए एक आधारभूत इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास करना है। यह डिजिटल हाइवेज के माध्यम से हेल्थकेयर पारिस्थितिकी तंत्र के विभिन्न हितधारकों के बीच मौजूदा अंतर (गैप) को कम करेगा।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन की दिशा में भारत का यह प्रयास वर्ष 2017 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति के रिलीज़ किए जाने के साथ प्रारंभ हुआ। जिसका उद्देश्य भारत में रजिस्ट्रियों, फ़ेडरल आर्किटेक्चर और डेटा मानकों एवं इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड के साथ स्वास्थ्य सेवा को डिजिटल बनाना है। वर्ष 2018 में इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्रियों, क्लेम प्लेटफार्म, व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड, फ़ेडरल आर्किटेक्चर, हेल्थ एनालिटिक्स जैसे डिजिटल स्वास्थ्य के घटकों को परिभाषित करने हेतु नेशनल हेल्थ स्टैक की शुरूआत की गई थी। वर्ष 2019 में इस दिशा में अग्रसर होते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य का ब्लू प्रिंट जारी किया गया। यह दस्तावेज देश भर में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र हेतु व्यापक संदर्भ, तर्क (rationale), दायरे और कार्यान्वयन व्यवस्था का वर्णन करता है। क्योंकि इसका कार्यान्वयन एक मिशन के तौर पर करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, इसलिए इस पहल को राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एन.डी.एच.एम.) के रूप में जाना जाता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में **"समस्त आयु वर्ग के सभी व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य और वैलनेस (wellness)** विज़न को परिभाषित किया गया। देखभाल की निरंतरता एक अवधारणा है, 'नागरिक केन्द्रित्ता, देखभाल की गुणवत्ता, बेहतर पहुंच, सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और समावेशिता आदि इस नीति के कुछ प्रमुख सिद्धांत हैं, जिनकी दृढ़ता से अनुशंसा की गई है।

इसके अलावा **एक राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र (एन.डी.एच.ई.)-** एक पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य ब्लू प्रिंट (एन.डी.एच.एम.) जारी किया है। एन.डी.एच.एम. एक विशेषज्ञ (स्पेशलाइज्ड) संगठन की स्थापना करने पर विशेष बल देता है जिसका नाम **राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एन.डी.एच.एम.) है,** जो ब्लू प्रिंट के कार्यान्वयन को संचालित कर सके और **एन.डी.एच.ई.** के विकास को बढ़ावा और सुविधा (facilitate) प्रदान कर सके।

एन.डी.एच.एम. बिल्डिंग ब्लॉक्स:

"थिंग बिग, स्टार्ट स्माल, स्केल फ़ास्ट' यह अवधारणा (एप्रोच) त्वरित एवं निरंतर सीखने पर आधारित कार्यान्वयन की अनुमति पदान करता है। एन.डी.एच.एम. को (विभिन्न) चरणों में प्रारंभ करने की योजना है और प्रारंभिक चरण में इसे निम्नलिखित बिल्डिंग ब्लॉक्स के साथ 06 केन्द्र शासित प्रदेशों में लांच किया गया है।

एन.डी.एच.एम. की अवधारणा 'डिजिटल बिल्डिंग ब्लॉक्स' के एक सेट के रूप में की गई है। प्रत्येक बिल्डिंग ब्लाक को 'डिजिटल पब्लिक गुड' के रूप में जाना जाता है। जिसका उपयोग डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र में किसी भी इकाई द्वारा किया जा सकता है और यह एन.डी.एच.एम. विज़न (vision) को सक्षम करने वाली प्रमुख क्षमताएं प्रदान करता है। इनमें से कुछ बिल्डिंग ब्लॉक रजिस्ट्रियां हैं। यह रजिस्ट्रियां विभिन्न प्रकार के डेटा (स्वास्थ्य सुविधाओं, स्वास्थ्य पेशेवरों आदि पर) के सुरक्षित भंडार हैं। जिनका उपयोगकर्त्ता (व्यक्ति या संगठन) स्वेच्छा से उपयोग कर सकते हैं। इन रजिस्ट्रियों को स्ट्रांग डेटा गवर्नेंस तंत्र के साथ डिज़ाइन किया जाएगा, जो सत्यापन, पहुँच और पहचान प्रबंधन के सिद्धांतों का पालन करते हैं। अपने संबंधित डोमेन में इन रजिस्ट्रियों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त और स्वीकृत डेटाबेस के रूप में उभरने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन्हें सफल माना जाएगा यदि इनको निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में पारिस्थितिकी तंत्र के हितधारकों द्वारा एक सत्य स्रोत (source of truth) के रूप में अपनाया जाता है। इसके अलावा इन्हें अपनाने को प्रोत्साहित करने हेतु इन रजिस्ट्रियों को अन्य एन.डी.एच.एम. ब्लॉक्स के साथ इंटरआपरेबल (interoperable) भी होना चाहिए।

एन.डी.एच.एम. में शामिल कुछ रजिस्ट्रियां, कोर रजिस्ट्रियां (core registries) हैं। यह मुख्य रजिस्ट्रियां भारत सरकार द्वारा विकसित, स्वामित्व और प्रबंधित की जा रही हैं। वर्तमान में इन मुख्य रजिस्ट्रियों (core registries) में शामिल हैं:

स्वास्थ्य (हेल्थ) आई.डी.: स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के किसी व्यक्ति की पहचान की प्रक्रिया को मानकीकृत करने के लिए प्रत्येक रोगी जो अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डिजिटल रूप में उपलब्ध

करना चाहता है, वह इस स्वास्थ्य (हेल्थ) आई.डी. बनाने की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक स्वास्थ्य आई.डी. को व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड एड्रेस (पी.एच.आर.) और हेल्थ डेटा कंसेंट मैनेजर से जोड़ा जाएगा। स्वास्थ्य आई.डी. को ई-कार्ड प्रारूप (फोर्मट्स) में प्रस्तुत किया जा सकता है और उन रोगियों को जारी किया जा सकता है, जिन्हें इसकी आवश्यकता है। स्वास्थ्य (हेल्थ) आई.डी. कार्ड में एक क्यू.आर. कोड भी शामिल होगा, जिसे स्वास्थ्य सुविधाओं में निर्बाध रोगी पंजीकरण (सीमलेस पेशेंट रजिस्ट्रेशन) को सक्षम (enable) करने के लिए स्कैन किया जा सकता है।

हेल्थ केयर प्रोफेशनल रजिस्ट्री: हेल्थकेयर प्रोफेशनल रजिस्ट्री को एन.डी.एच.बी. में हेल्थ वर्क फ़ोर्स रजिस्ट्री के रूप में जाना जाता है। इसमें डाक्टरों, नर्सों, पैरामेडिकल स्टाफ, आशा और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के कैडर के बारे में जानकारी (सूचनाएं) प्रदान कराने से संबंधित मास्टर डेटा उपलब्ध है। एन.डी.एच.एम. इन रजिस्ट्रियों को चरणबद्ध तरीके से विकसित कर रहा है। जिसकी शुरूआत, डाक्टरों के लिए Digi Doctors प्लेटफार्म से की जा रही है।

स्वास्थ्य सुविधा रजिस्ट्री: स्वास्थ्य सुविधा रजिस्ट्री में चिकित्सा की सभी प्रणालियों में सार्वजनिक और निजी दोनों स्वास्थ्य सुविधाओं को कवर करते हुए देश की प्रत्येक स्वास्थ्य सुविधा- अस्पताल, क्लिनिक, नैदानिक केंद्र, फार्मेसी आदि के लिए एक रिकॉर्ड और एक यूनिक (unique) पहचानकर्ता (identifier) मौजूद होगा।

अन्य बिल्डिंग ब्लॉक्स हैं **कंसेंट मैनेजर एंड गेटवे**: अपने सॉफ्टवेयर को एच.आई.पी. या एच.आई.यू. के रूप में पंजीकृत करें और यह सुनिश्चित करें कि आप रिकॉर्ड को सही ढंग से लिंक करने, सहमति अनुरोधों (कंसेंट रिक्वेस्टस) को संसाधित करने में सक्षम हैं।

Andriod के लिए PHR मोबाइल एप्लीकेशन- अपनी स्वास्थ्य आई.डी. को मैनेज करने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को देखने और सहमति (कंसेंट) को मैनेज करने के किए इस एप्लीकेशन का उपयोग करें।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 15 अगस्त, 2020 को राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन का शुभारंभ किया गया है और वर्तमान में भारत के केंद्रशासित प्रदेशों में इसे शुरू (रोल आउट) किया जा रहा है। विभिन्न स्वास्थ्य अनुप्रयोगों को राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र के साथ खुद को जोड़ने/एकीकृत करने की सलाह दी गई है। सी-डैक का ई-सुश्रुत एच.आई.एम.एस. एप्लीकेशन ऐसा प्रथम एप्लीकेशन है, जिसे एच.डी.एच.ई. (HDHE) के साथ एकीकृत किया गया है।

स्रोत:

i. मार्च, 2017 में रिलीज़ की गई राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति।

ii. जुलाई, 2018 में रिलीज़ किया गया राष्ट्रीय स्वास्थ्य स्टैक।

iii. अप्रैल, 2019 में रिलीज़ किया गया राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य ब्लू प्रिंट (एन.डी.एच.बी.)।

iv. जुलाई, 2020 में रिलीज़ किया गया राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन रणनीति दस्तावेज।

♦♦♦

जरा सोचिए

हिन्दी हमारी राजभाषा है
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है
हिन्दी हमारी राज्यभाषा है

फिर हिन्दी के कार्य में संकोच क्यों?
हिन्दी में कार्य करें, राष्ट्र का निर्माण करें।

तकनीकी लेख

ब्लॉकचेन तकनीक

- बबिता
प्रधान तकनीकी अधिकारी

संदर्भ एवं पृष्ठभूमि

ब्लॉकचेन को भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिये क्रांतिकारी तकनीक माना जा रहा है, लेकिन इस प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति के संबंध में बहुत अधिक जानकारी सुलभ नहीं है। ऐसा माना जाता है कि 2008 में बिटकॉइन का आविष्कार होने के बाद इस क्रिप्टो-करेंसी को समर्थन देने के लिए इस ब्लॉकचेन तकनीक की खोज की गई। यह एक ऐसी आधुनिक तकनीक है जिसके बिना बिटकॉइन या अन्य किसी भी प्रकार की क्रिप्टो-करेंसी का लेन-देन कर पाना असंभव है।

क्या है ब्लॉकचेन?

- जिस प्रकार हज़ारों-लाखों कंप्यूटरों को आपस में जोड़कर इंटरनेट का अविष्कार हुआ, ठीक उसी प्रकार डाटा ब्लॉकों (आँकड़ों) की लंबी श्रृंखला को जोड़कर उसे ब्लॉकचेन का नाम दिया गया है।
- ब्लॉकचेन तकनीक तीन अलग-अलग तकनीकों का समायोजन है, जिसमें इंटरनेट, पर्सनल 'की' (निजी कुंजी) की क्रिप्टोग्राफी अर्थात् जानकारी को गुप्त रखना और प्रोटोकॉल पर नियंत्रण रखना शामिल है।
- क्रिप्टोग्राफी की सुरक्षित श्रृंखला पर सर्वप्रथम 1991 में स्टुअर्ट हैबर और डब्ल्यू. स्कॉट स्टोर्नेटा ने काम किया। इसके अगले वर्ष यानि 1992 में इन दोनों के साथ बायर भी आ मिले और इसके डिज़ाइन में सुधार किया, जिसकी वज़ह से ब्लॉक्स को एकत्रित करने का काम आसान हो गया।
- ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीक है जिससे बिटकॉइन तथा अन्य क्रिप्टो-करेंसियों का संचालन होता है। यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो यह एक डिजिटल 'सार्वजनिक बही-खाता' (Public Ledger) है, जिसमें प्रत्येक लेन-देन का रिकॉर्ड दर्ज़ किया जाता है।
- ब्लॉकचेन में एक बार किसी भी लेन-देन को दर्ज करने पर इसे न तो वहाँ से हटाया जा सकता है और न ही इसमें संशोधन किया जा सकता है।
- ब्लॉकचेन के कारण लेन-देन के लिये एक विश्वसनीय तीसरी पार्टी जैसे- बैंक की आवश्यकता नहीं पड़ती।

- इसके अंतर्गत नेटवर्क से जुड़े उपकरणों (मुख्यतः कंप्यूटर की श्रृंखलाओं, जिन्हें नोड्स कहा जाता है) के द्वारा सत्यापित होने के बाद प्रत्येक लेन-देन के विवरण को बही-खाते में रिकॉर्ड किया जाता है।

वैश्विक स्थिति क्या है?

- आज कई विशाल वैश्विक वित्तीय कंपनियां इसके निहितार्थ और अवसरों के मद्देनज़र इसे अपने कार्यों में शामिल करने पर विचार कर रही हैं।
- कई विकसित देशों में सरकारें अपने यहाँ बेहतर गवर्नेंस के लिये ब्लॉकचेन तकनीक के इस्तेमाल की योजना बना रही हैं।
- 2016 में रूस में ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म पर आधारित एक पायलट परियोजना की शुरुआत की गई, जिसमें इस तकनीक का इस्तेमाल स्वचालित मतदान प्रणाली के लिए करने पर काम चल रहा है।
- विश्व आर्थिक फोरम द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, विश्वभर में 90 से अधिक केंद्रीय बैंक ब्लॉकचेन चर्चा में शामिल हैं।
- पिछले तीन वर्षों में इसके लिए 2500 पेटेंट दर्ज़ किये गए हैं।

भारत में ब्लॉकचेन

बेशक बिटकॉइन इस तकनीक का मात्र एक अनुप्रयोग है, जिसके उपयोग की जाँच अनेक उद्योगों में की जा रही है। भारत के बैंकिंग और बीमा क्षेत्र में इसके प्रति बहुत आकर्षण देखने को मिल रहा है। वस्तुतः इन क्षेत्रों में कई लोग संघ का निर्माण कर रहे हैं, ताकि वे उद्योगों के स्तर पर ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के लाभों से विश्व को अवगत करा सकें।

- वैश्विक जगत से कदम ताल मिलाते हुए कुछ भारतीय कंपनियों ने ब्लॉकचेन तकनीक के ज़रिये वित्तीय सेवाएँ देना शुरू कर दिया है।
- बजाज समूह की एनबीएफसी व बीमा कंपनी बजाज फिनसर्व इस तकनीक की मदद से ट्रैवल इंश्योरेंस में संबंधित ग्राहकों द्वारा सूचना दर्ज कराने से पहले ही क्लेम का निपटान कर रही है।
- कंपनी ग्राहक सेवा में सुधार के उद्देश्य से ब्लॉकचेन तकनीक का इस्तेमाल कर रही है। इस तकनीक पर पूरी निगरानी रखी जाती है।
- बजाज इलेक्ट्रिकल लिमिटेड भी बिल डिस्काउंटिंग प्रोसेस में मानवीय हस्तक्षेप को खत्म करने के लिये ब्लॉकचेन तकनीक का इस्तेमाल कर रही है।

- भारत में 'बैंकचैन' नामक एक संघ है जिसमें भारत के लगभग 27 बैंक (जिनमें भारतीय स्टेट बैंक और आई.सी.आई.सी.आई. भी शामिल हैं) शामिल हैं और मध्य-पूर्व के राष्ट्र इसके सदस्य हैं। यह संघ व्यवसायों को सुरक्षित बनाने और इनमें तेज़ी लाने के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के लाभों का व्यापक प्रसार कर रहा है।
- इसके अलावा भारतीय रिज़र्व बैंक की एक शाखा 'इंस्टीट्यूट फॉर डेवलपमेंट एंड रिसर्च इन बैंकिंग टेक्नोलॉजी' ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के लिए एक आधुनिक प्लेटफॉर्म का विकास कर रही है।
- भारत में तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पायलट परियोजना के तौर पर इसकी शुरुआत की गई है, जहाँ इसका इस्तेमाल आँकड़ों के सुरक्षित भंडार के रूप में किया जा सकता है।

कैसे काम करती है ब्लॉकचेन तकनीक?

- माना जाता है कि ब्लॉकचेन में तमाम उद्योगों की कार्यप्रणाली में भारी बदलाव लाने की क्षमता है। इससे प्रक्रिया को ज़्यादा लोकतांत्रिक, सुरक्षित, पारदर्शी और सक्षम बनाया जा सकता है।
- ब्लॉकचेन एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जो सुरक्षित एवं आसानी से सुलभ नेटवर्क पर लेन-देनों का एक विकेंद्रीकृत डाटाबेस तैयार करती है।
- इस वर्चुअल बही-खाते में लेन-देन के इस साझा रिकॉर्ड को नेटवर्क पर स्थित ब्लॉकचेन को इस्तेमाल करने वाला कोई भी व्यक्ति देख सकता है।
- ब्लॉकचेन डाटा ब्लॉकों (आँकड़ों) की एक ऐसी श्रृंखला है जिसके प्रत्येक ब्लॉक में लेन-देन का एक समूह समाविष्ट होता है।
- ये ब्लॉक एक-दूसरे से इलेक्ट्रॉनिक रूप से जुड़े होते हैं तथा इन्हें कूट-लेखन (Encryption) के माध्यम से सुरक्षित रखा जाता है।
- यह तकनीक सुरक्षित है तथा इसे हैक करना मुश्किल है। इसीलिये साइबर अपराध और हैकिंग को रोकने के लिये यह तकनीक सुरक्षित मानी जा रही है।
- इसके अंतर्गत नेटवर्क से जुड़ी कंप्यूटर की श्रृंखलाओं, (जिन्हें नोड्स कहा जाता है) के द्वारा सत्यापित होने के बाद प्रत्येक लेन-देन के विवरण को बही-खाते में रिकॉर्ड किया जाता है।

ब्लॉकचेन की प्रमुख विशेषताएँ

- विकेंद्रीकरण और पारदर्शिता ब्लॉकचेन तकनीक की सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है, जिसकी वज़ह से यह तेज़ी से लोकप्रिय और कारगर साबित हो रही है।
- ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीक है जिसे वित्तीय लेन-देन (Financial Transactions) रिकॉर्ड करने के लिये एक प्रोग्राम के रूप में तैयार किया गया है।
- यह एक डिजिटल सिस्टम है, जिसमें इंटरनेट तकनीक बेहद मज़बूती के साथ अंतर्निहित है।
- यह अपने नेटवर्क पर समान जानकारी के ब्लॉक को संग्रहित कर सकता है।
- ब्लॉकचेन डेटाबेस को वितरित करने की क्षमता रखता है अर्थात् यह एक डिस्ट्रिब्यूटेड नेटवर्क की तरह कार्य करता है।
- डेटाबेस के सभी रिकॉर्ड किसी एक कंप्यूटर में स्टोर नहीं होते, बल्कि हज़ारों-लाखों कंप्यूटरों में इसे वितरित किया जाता है।
- ब्लॉकचेन का हर एक कंप्यूटर हर एक रिकॉर्ड के पूरे इतिहास का वर्णन कर सकता है। यह डेटाबेस एन्क्रिप्टेड होता है।
- ब्लॉकचेन सिस्टम में यदि कोई कंप्यूटर खराब भी हो जाता है तो भी यह सिस्टम काम करता रहता है।
- जब भी इसमें नए रिकार्ड्स को दर्ज करना होता है तो इसके लिए कई कंप्यूटरों की स्वीकृति की ज़रूरत पड़ती है।
- ब्लॉकचेन को यूज़र्स का ऐसा ग्रुप आसानी से नियंत्रित कर सकता है, जिसके पास सूचनाओं को जोड़ने की अनुमति है और वही सूचनाओं के रिकॉर्ड को संशोधित भी कर सकता है।
- इस तकनीक में बैंक आदि जैसे मध्यस्थों की भूमिका समाप्त हो जाती है और व्यक्ति-से-व्यक्ति (P-to-P) सीधा संपर्क कायम हो जाता है।
- इससे ट्रांजेक्शंस में लगने वाला समय तो कम होता ही है, साथ ही गलती होने की संभावना भी बेहद कम रहती है।

कहाँ हो सकता है इसका उपयोग?

क्रिप्टो-करेंसियों के अलावा निम्नलिखित क्षेत्रों में ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग किया जा सकता है:- सूचना प्रौद्योगिकी और डाटा प्रबंधन, सरकारी योजनाओं का लेखा-जोखा, सब्सिडी वितरण, कानूनी कागज़ात रखने, बैंकिंग और बीमा, भू-रिकॉर्ड विनियमन, डिजिटल पहचान और

प्रमाणीकरण, स्वास्थ्य आंकड़े, साइबर सुरक्षा, क्लाउड स्टोरेज, ई-गवर्नेंस, स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट, शैक्षणिक जानकारी, ई-वोटिंग आदि।

निष्कर्ष

यह अपेक्षा की जा रही है कि बिचौलियों को हटाकर ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी सभी प्रकार के लेन-देन की दक्षता में सुधार लाएगी तथा इससे सभी लेन-देनों की लागत में भी कमी आएगी। साथ ही इससे पारदर्शिता में भी वृद्धि होगी तथा फर्जी लेन-देनों से मुक्ति मिलेगी, क्योंकि इसके अंतर्गत प्रत्येक लेन-देन को एक सार्वजानिक बही खाते में रिकॉर्ड तथा आवंटित किया जाएगा। आज साइबर सुरक्षा, बैंकिंग और बीमा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर चिंताएं सामने आ रही हैं तथा ऐसे में इन्हें सुरक्षित बनाने के लिये ब्लॉकचेन तकनीक के उपयोग को लेकर स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान संदर्भों में ब्लॉकचेन एक गेमचेंजर साबित हो सकता है, बशर्ते इसके महत्त्व और क्षमताओं की पहचान समय रहते कर ली जाए।

♦♦♦

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

- आचार्य विनोबा भावे

ऑपरेटिंग सिस्टम

- विक्रम सूद
प्रोजेक्ट एसोसिएट

ऑपरेटिंग सिस्टम (OS) एक सॉफ्टवेयर होता है जो कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप आदि तथा यूजर के मध्य इंटरफेस की तरह कार्य करता है। जिस तरह इंसान को कार्य करते रहने के लिए दिल की आवश्यकता होती है, उसी तरह कंप्यूटर, मोबाइल आदि को कार्य करने के लिए ऑपरेटिंग सिस्टम की आवश्यकता होती है। ओ.एस. कंप्यूटर, मोबाइल आदि में लोड होने वाला पहला प्रोग्राम होता है। इसे प्रोग्राम ऑफ प्रोग्राम्स भी कहा जाता है। ओ.एस. का कार्य अन्य प्रोग्राम्स तथा एप्लिकेशनस को चलाना होता है। यह कंप्यूटर के हार्डवेयर और सॉफ्टेयर के मध्य एक पुल की तरह कार्य करता है। ओ.एस. के बिना कंप्यूटर, मोबाइल आदि किसी काम के नहीं।

ऑपरेटिंग सिस्टम दो प्रकार के होते हैं। एक जो कंप्यूटर में इस्तेमाल किए जाते हैं और दूसरे जो मोबाइल में इस्तेमाल किए जाते हैं। कंप्यूटर में इस्तेमाल किए जाने वाले ओ.एस. भी दो प्रकार के होते हैं। जी.यू.आई. (ग्राफिकल यूजर इंटरफेस) और सी.एल.आई. (कमांड लाइन इंटरफेस) इन दो प्रकारों पर कंप्यूटर ओ.एस. आधारित है।

जी.यू.आई.

ग्राफिक्स यूजर इंटरफेस एक प्रकार का इंटरफेस है जिसमें यूजर ग्राफिक्स के द्वारा कोई भी सॉफ्टेवयर या फिर एप्लिकेशन के साथ इंटरएक्ट कर सकता है। ग्राफिक्स का अर्थ यहां आइकन या बटन से है जिन्हें यूजर अपनी जरूरत के अनुसार माउस या की-बोर्ड का प्रयोग करके कंप्यूटर को आसानी से चला पाता है। विंडोज और लिनक्स जी.यू.आई. ऑपरेटिंग सिस्टम है।

सी.एल.आई.

कमांड लाइन इंटरफेस में सिस्टम में कोई भी कार्य करने के लिए कमांड लिखना पड़ता है। इसे कैरेक्टर यूजर इंटरफेस भी कहा जाता है। सी.एल.आई. में सबसे पहले यूजर की-बोर्ड की मदद से कमांड दर्ज करता है और की-बोर्ड पर एंटर की दबाकर इसे एक्सीक्यूटर करता है। इस तरह यूजर

सी.एल.आई. पर काम करता है। इस प्रकार के इंटरफेस में काम करने के लिए यूजर का तकनीकी रूप से सक्षम होना जरूरी है। यूजर को सी.एल.आई. में प्रयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर के कमांड और इसके सिंटेक्स पता होने चाहिए। सी.एल.आई. को कोई आम यूजर नहीं चला सकता। यह यूजर फ्रेंडली नहीं होता है । डॉस और यूनिक्स सी.एल.आई. ऑपरेटिंग सिस्टम हैं।

जिस तरह कंप्यूटर ओ.एस. होते हैं उसी प्रकार से मोबाइल में भी ऑपरेटिंग सिस्टम होते हैं। एंड्रायड और आई.ओ.एस. (आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम) इसके मुख्य उदाहरण हैं।

एंड्राइड

एंड्राइड गूगल द्वारा डेवपल किया गया एक ऑपरेटिंग सिस्टम है। एंड्राइड ऑपरेटिंग सिस्टम लिनक्स कर्नल पर आधारित ऑपरेटिंग सिस्टम है। इसे ये भी कहा जा सकता है कि यह लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम का ही एक वर्जन है। एंड्राइड लिनक्स को कस्टमाइज करके बनाया गया है। यह लिनक्स के मुख्य भाग कर्नल का इस्तेमाल करके बनाया गया है। एंड्राइड एक ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर है, इसका सोर्स कोड कोई भी देख सकता है, यह सभी को लिए खुला रहता है। यही इंड्राइड की खामी भी है। इस कोड को अपने हिसाब से कस्टमाइज करके कोई भी इसका गलत फायदा उठा सकता है। ओपन सोर्स होने की वजह से इसमें आसानी से वायरस भी आ सकते हैं।

आई.ओ.एस.

आईफोन ऑपरेटिंग सिस्टम एप्पल द्वारा बनाया गया एक ऑपरेटिंग सिस्टम है जो सिर्फ एप्पल के अलग-अलग डिवाइसेस में काम करता है। यह इंड्राइड के बाद विश्व में दूसरा सबसे ज्यादा उपयोग में आने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम है। आई.ओ.एस. को C,C++, Objective-C, Swift और Assembly Language जैसी कंप्यूटर लैंगवेज से प्रोग्राम किया गया है। आई.ओ.एस. एक क्लोज्ड सोर्स सॉफ्टवेयर है। इसका “की” सिर्फ एप्पल के लिए खुला है। सिर्फ एप्पल ही इसे यूज करके इसमें अपने हिसाब से बदलाव कर सकता है। इसलिए यह एंड्राइड से सुरक्षित है।

♦♦♦

SEO क्या है?

अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

यह एक ऐसा फॉर्मूला है जिसकी मदद से लोग अपनी वेबसाइट को गूगल के पहले पेज पर लाते हैं। आजकल वेबसाइट बनाना और ब्लॉगिंग करना कोई मुश्किल काम नहीं रह गया है, परंतु SEO समझना और करना आज भी मुश्किल है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि इसके मायने बदलते रहते हैं। गूगल अपनी नई नई पॉलिसी लाता रहता है जिसमें आपको हर पहलू को नए सिरे से समझना पड़ता है और उसके हिसाब से काम करना पड़ता है। तभी आप अपने ब्लॉग को रैंक (Rank) करवा सकते हैं वरना नहीं।

SEO क्यों करते हैं?

वेबसाइट अथवा ब्लॉग को गूगल में पहले पेज पर लाने के लिए यह किया जाता है।

- आप अपने वेबसाइट को रैंक करवा कर पैसे कमा सकते हैं।
- और दूसरों की वेबसाइट को भी रैंक करवा कर पैसे कमा सकते हैं, उनसे पैसे लेकर।
- एफिलिएट मार्केटिंग करने के लिए मतलब कि कोई प्रोडक्ट बिकवाने के लिए।

क्योंकि इसकी मांग हर जगह है। आजकल कोई भी ब्लॉग बना लेता है परंतु उसके पैसा कमाने की ख्वाहिश तब तक अधूरी रहती है जब तक उसका वेबसाइट गूगल में ऊपर नहीं आता। आप यहीं पर उसकी मदद कर सकते हैं अगर आपको SEO आता है तो।

SEO कैसे करें?

इसे करने के बहुत सारे तरीके हैं। हम इसको दो बड़े हिस्से में बाँट सकते हैं। पहला है ऑन पेज SEO और दूसरा है ऑफ पेज SEO

ऑन पेज SEO क्या है ?

इस प्रकार की SEO शैली का इस्तेमाल तब किया जाता है जब आप कोई पोस्ट अथवा लेख अपने वेबसाइट पर लिख रहे हैं। अगर आपको गूगल में सबसे ऊपर रैंक करना है तो आपको इस वाली शैली को सीखना होगा और अच्छे तरीके से इस्तेमाल भी करना होगा। इसमें बहुत सारी चीजें

आती हैं जैसे कि आपके वेबसाइट की गति, आपके कंटेंट लिखने का तरीका, आपने किस चीज को टारगेट किया है, किस की-वर्ड को टारगेट किया है, और आपने अपने महत्वपूर्ण की-वर्ड को कितनी जगह दी है अपने पोस्ट में, यह सारी चीजें इसमें आती हैं।

1. वेबसाइट की स्पीड

- वेबसाइट की स्पीड बहुत आवश्यक पहलू है।
- गूगल में रैंक करने के लिए वेबसाइट की स्पीड तेज़ होना बहुत आवश्यक है।
- स्पीड तेज़ होने का मतलब यह है कि वेबसाइट कितनी जल्दी पूरी लोड होती है।
- अगर किसी वेबसाइट को लोड लेने में 4 सेकंड लगते हैं और दूसरी वेबसाइट को 1 सेकंड लगता है तो इसमें से गूगल 1 सेकंड वाली वेबसाइट को ज्यादा इज्जत देगा मतलब 1 सेकंड वाले की रैंक अच्छी होने की संभावना है।

2. वेबसाइट का डिज़ाइन

- वेबसाइट का डिज़ाइन हमेशा अच्छा होना चाहिए।
- बल्कि इससे आशय यह है कि जितना हो सके उतना साधारण डिज़ाइन रखकर लोगों को बिना ज्यादा परेशान किए उनको जो चाहिए अपनी वेबसाइट पर दें।
- आपकी वेबसाइट पर खिचड़ी नहीं बनी होनी चाहिए और हर एक वस्तु लोगों को एक नजर में देखकर समझ में आ जानी चाहिए।

अगर लोग आप की वेबसाइट पर आते हैं और उन्हें वेबसाइट का **Design** पसंद नहीं आता और वह **Back button** दबाकर किसी और वेबसाइट पर चले जाते हैं तो इसका संकेत गूगल को गलत जाएगा और आपकी वेबसाइट को गूगल नीचे कर देगा। इसलिए अपनी वेबसाइट का डिज़ाइन ऐसा रखें जो देखने में अच्छा लगता हो और आपके कंटेंट को अच्छे से लोगों के सामने प्रस्तुत करता हो।

वेबसाइट के डिजाइन में आपका होमपेज कैसा दिखता है यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। आपका होम पेज वह जगह होती है जहां पर लोग एक बार पोस्ट पढ़ने के बाद अवश्य आते हैं। इसलिए आपको थोड़ा वक्त अपने होमपेज को सजाने में अवश्य लगाना चाहिए और वहां पर ऐसी महत्वपूर्ण वस्तु रखनी चाहिए जो दर्शकों को आपकी वेबसाइट पर बार-बार आने पर मजबूर करे।

ऑफ पेज (Off-page) SEO

ऑफ पेज (Off page) SEO में दो महत्वपूर्ण वस्तुएं आती हैं।

- **पहला है बैक लिंक बनाना और**
- **दूसरा है सोशल मीडिया से ट्रैफिक लेना**

बैक लिंक (Backlink) लेने से यह फायदा होता है कि आपकी वेबसाइट की वैल्यू गूगल की नजर में बहुत अच्छी बनती जाती है। जितनी अच्छी वेबसाइट से आप लिंक लेंगे उतनी ही अच्छी आपकी रैंकिंग होगी गूगल में। इसलिए बैकलिंक लेना बहुत आवश्यक हो जाता है। लेकिन अब बात आती है कि इसे बनाते कैसे हैं और क्या क्या ऐसे जरिए हैं जिसकी मदद से हम ऐसा कर सकते हैं।

सोशल मीडिया लिंक्स और ट्रैफिक (Social media links and traffic)

सोशल मीडिया पर आपकी वेबसाइट किस तरीके से दिखती है इस पर गूगल की निगाह रहती है। इसलिए आपको अपना वर्चस्व सोशल मीडिया पर भी बनाना पड़ेगा। आपको कुछ ऐसा करना पड़ेगा कि लोग आपकी वेबसाइट पर फेसबुक, ट्विटर और ऐसे ही अन्य सोशल मीडिया अकाउंट से आएं। यह बहुत आवश्यक है क्योंकि यह सोशल मीडिया साइट बहुत बड़ी-बड़ी value वाली होती हैं। इन पर से ट्रैफिक लेना गूगल को एक अच्छा संकेत देता है।

कुछ महत्वपूर्ण सोशल मीडिया वेबसाइट (Some important social media websites)

1. फेसबुक (Facebook)
2. लिंक्डइन (Linkedin)
3. ट्विट्टर (Twitter)
4. इन्स्टाग्राम (Instagram)
5. टम्बलर (Tumblr)
6. यूट्यूब (Youtube)
7. विमइओ (Vimeo)

निष्कर्ष

SEO ज्यादा मुश्किल नहीं होता अगर आप इसको ठीक तरीके से समझें और सबसे बड़ी बात यह है कि जितना आप प्रयास करेंगे उतना आपको यह समझ में आएगा। आपको लगातार इस विषय पर काम करते रहना होगा और हर चीज को खुद आजमा कर देखना होगा, तभी आप समझ पाएंगे कि किस तरीके से यह काम करता है।

♦♦♦

तकनीकी लेख

बिग डाटा का विवरण

- बबिता
प्रधान तकनीकी अधिकारी

बिग डाटा क्या है?

बिग डाटा भी डेटा है लेकिन एक विशाल आकार के साथ। **बिग डेटा** एक शब्द है जिसका उपयोग डेटा के संग्रह का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो कि मात्रा में विशाल है और समय के साथ तेजी से बढ़ रहा है। संक्षेप में इस तरह के डेटा इतने बड़े और जटिल हैं कि कोई भी पारंपरिक डेटा प्रबंधन उपकरण इसे स्टोर करने या इसे कुशलता से संसाधित करने में सक्षम नहीं है।

बिग डाटा : कारोबार के लिए चुनौतियां

बिग डाटा का विश्लेषण करने में कई तरह की अजीब चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बिग डाटा के साथ जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है वह हैं- क्यूरेशन, सर्च, शेयरिंग, स्टोरेज, ट्रांसफर, विजुअलाइजेशन, क्वैरीइंग, अपडेटिंग और इनफॉर्मेशन प्राइवेसी। डाटा का एक बार विश्लेषण हो जाने के बाद जो परिणाम आते हैं उनको अपने ग्राहकों का आधार बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करना भी एक चुनौती है। इसमें शामिल है- ग्राहकों की मांग का बेहतर तरीके से अंदाज़ा लगाना, बाजार की उभरती नई-नई ज़रूरतों के अनुसार नए-नए तरीकों को पेश करना, ग्राहकों या उपभोक्ताओं के अनुभव को बेहतर बनाना, साथ ही साथ, उत्पादन, परिवहन या वितरण में कमो-बेश करके कारोबार की लागत को कम करना।

जहां तक बिग डाटा के उपयोग और विश्लेषण की बात है, कंपनियों ने लंबा सफर तय किया है, लेकिन अभी भी बिग डाटा के अधिकांश हिस्से का इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। दो हज़ार चौदह में इ.एम.सी. और आई.डी.सी. ने जो अध्ययन किया उसके अनुसार कॉरपोरेट जगत के करीब सत्तर फीसदी डाटा का विश्लेषण नहीं किया जा सका है। बयासी फीसदी पेशेवरों का मानना है कि एनालिटिक्स और बिग डाटा के उपयोग से कंपनी के ऑपरेशन और प्रक्रियाओं में सुधार लाया जा सकता है।

बिग डाटा रणनीति कैसे तैयार करें?

बिग डाटा रणनीति को तैयार करने के लिए सबसे पहला कदम यह है कि बिग डाटा प्रोजेक्ट के

लक्ष्यों की पहचान करें और **कंपनी जिन परिणामों को पाना चाहती है उसको परिभाषित** करें। आपकी कंपनी को क्या चाहिए? क्या आप ग्राहकों के अनुभव में सुधार लाना चाहते हैं? आपकी रणनीति पर उत्पादन और ऊपरी लागत से कितना फर्क पड़ता है?

दूसरा कदम है - **विभिन्न डाटा स्रोतों को जुटाना।** कंपनी अपने संगठन के भीतर की बाधाओं का पता लगाती है। जैसे कि अलग अलग व्यापार और सेवाओं के बीच खराब संबंध या संवाद या विभिन्न सेवाओं में अलग अलग बाधाएं।

बिग डाटा रणनीति तैयार करने के लिए अंतिम कदम है, जुटाए गए डाटा का **विश्लेषण**। इस तरह के डाटा का विश्लेषण आंतरिक या बाहरी संसाधनों से कराया जा सकता है। आंतरिक संसाधन जैसे कि कंपनी डाटा वैज्ञानिक और बाहरी संसाधन जैसे तीसरे पक्ष के विश्लेषक जो उचित और निष्पक्ष टिप्पणी प्रदान करते हैं।

बिग डाटा का विश्लेषण कैसे करें ?

बिग डाटा का विश्लेषण करने के लिए जिन टूल्स का प्रयोग करना चाहिए, उनका बिग डाटा के तीन प्रमुख नियमों को पूरा करना जरूरी है- **वॉल्यूम**, **वेलोसिटी** और **वैरायटी।** इस नियम का पालन करने से कम्पनियों को विभिन्न स्रोतों से आए बड़ी मात्रा में डाटा को प्रोसेस करने में मदद मिलती है, साथ ही, वह इन परिणामों को कम समय में शेयर कर पाती हैं।

जहां तक डाटा विश्लेषण के लिए सबसे बेहतर टूल चुनने की बात है, इसके लिए कई उपाय हैं जो उपयोगी साबित हो सकते हैं। पहला उपाय ये है कि **विश्लेषित डाटा के लक्ष्य की जांच करना।** कंपनियों के सी.आर.एम., सोशल नेटवर्क, साथ ही साथ सेंसर्स से डाटा को जुटाया जा सकता है। कंपनी की रणनीति इसके विभिन्न संसाधनों के अनुकूल होनी चाहिए, भले वह रणनीति आंतरिक हो या बाहरी।

दूसरा उपाय यह है कि **कंपनी के व्यापार क्षेत्र के साथ सामंजस्य स्थापित करना।** कंपनी की जरूरतें इसके सेक्टर पर भी निर्भर करती हैं। इसलिए इस बात की जरूरत है कि इसके कारोबार के क्षेत्र को देखते हुए हर समाधान में खास फीचर्स शामिल किए जाएं।

बिग डाटा का विश्लेषण करते समय, कंपनियों के लिए **डाटा को आंतरिक रूप से होस्ट करना या क्लाउड सर्विस को चुनना** अधिक उपयोगी हो सकता है। क्लाउड सर्विस से जानकारियां आसानी से

उपलब्ध कराई जा सकती हैं और क्लाउड सर्विस जानकारियों के विशाल भंडार को स्टोर करने के लिए बेहतर स्पेस उपलब्ध कराता है।

बिग डाटा टूल्स कैसे चुनें ?

बिग डाटा के कुछ बहेतरीन टूल्स हैं :-

1. डाटा स्टोरेज और मैनेजमेंट: - हड्डप कंप्यूटर क्लस्टर पर बहुत बड़ी डेटासेट के वितरित संग्रहण के लिए यह एक ओपन सोर्स सॉफ़्टवेयर है। मोंगोडीबी- यह टूल ऐसे डेटा को मैनेज करने के लिए अच्छा है जो अक्सर बदलता है या असंरचित या अर्द्ध-संरचित है मोबाइल अप्प्स, प्रोडक्ट कैटलॉग्स आदि।

2. डाटा क्लीनिंग: - ओपन रिफाइन और डाटा क्लीनर ऐसे टूल्स हैं जो अर्ध संरचित डेटा को साफ पठनीय डेटा सेटों में बदलते हैं, जो कि सभी विज़ुअलाइजेशन कंपनियां पढ़ सकती हैं।

3. डाटा माइनिंग: - रैपिड माइनर पूर्वानुमानित विश्लेषण के लिए शानदार टूल है। ओरेकल डाटा माइनिंग टूल में ग्राहकों के व्यवहार को डिस्कवर करने के लिए, सर्वोत्तम ग्राहकों को टारगेट करने और प्रोफाइल विकसित करने के लिए मॉडल बनाने की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

4. डाटा एनालिसिस: - स्टैविंग टूल काम्प्लेक्स डाटा एनालिसिस के लिए ब्यूटीफुल विज़ुअल्स प्रोवाइड कराता है। बिग एम एल टूल में मशीन लर्निंग सर्विसेज उपलब्ध हैं जिसमें डाटा इम्पोर्ट करके प्रेडिक्टिव एनालिसिस की जा सकती है।

5. डाटा विज़ुअलाइज़ेशन: - टैबलेउ, कार्टो डी बी और सिल्क, इन टूल्स की मदद से इंटरैक्टिव चार्ट्स और मैप्स बहुत आसानी से बनाए जा सकते हैं।

6. डाटा इंटीग्रेशन: - ब्लॉक स्प्रिंग- डाटा विज़ुअलाइज़ेशन के दौरान बनाये गए चार्ट्स और मैप्स को फेसबुक या ट्विटर पर शेयर की सेवाएं भी उपलब्ध कराता है। पेंटाहो सॉफ्टवेयर डाटा इंटीग्रेशन के साथ-साथ एम्बेडेड एनालिटिक्स और बिज़नेस एनालिटिक्स की सेवाएं भी उपलब्ध कराता है।

बिग डाटा प्रोसेसिंग के लाभ

1. रणनीति बनाते समय बिग डाटा सहायक होता है।

खोज इंजन और फेसबुक, ट्विटर जैसी साइटों से सामाजिक डेटा तक पहुंच संगठनों को अपनी व्यावसायिक रणनीतियों को ठीक करने में सक्षम बनाता है।

2. बेहतर ग्राहक सेवा

पारंपरिक ग्राहक फीडबैक सिस्टम को बिग डेटा प्रौद्योगिकियों के साथ डिज़ाइन किए गए नए सिस्टम द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। इन नई प्रणालियों में, उपभोक्ता प्रतिक्रियाओं को पढ़ने और मूल्यांकन करने के लिए बिग डेटा और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है।

- उत्पाद / सेवाओं के लिए जोखिम की प्रारंभिक पहचान, यदि कोई हो
- बेहतर परिचालन क्षमता

बिग डेटा तकनीकों का उपयोग नए डेटा के लिए एक स्टेजिंग क्षेत्र या लैंडिंग ज़ोन बनाने से पहले किया जा सकता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि डेटा को डेटा वेयरहाउस में कैसे स्थानांतरित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, बिग डेटा प्रौद्योगिकियों और डेटा वेयरहाउस के इस तरह के एकीकरण से एक संगठन को अक्सर एक्सेस किए गए डेटा को लोड करने में मदद मिलती है।

♦♦♦

कोरोना के इस दौर में, मचा दुनिया में कोहराम।
दो गज दूरी मुंह को ढक कर, बच जाएगी जान।।

गैर-तकनीकी लेख

हमारे लक्ष्य और मानवीय ऊर्जा

- राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

दुर्भाग्य की बात है कि जन्म के दिन से ही हमारे माँ-बाप और अन्य लोग, हमें प्रकृति से विरासत में प्राप्त ऊर्जा का आंकलन किए बिना ही, हमारी तुलना समाज के अन्य लोगों से करने लग जाते हैं. धीरे धीरे हम खुद भी, बिना अपना आंकलन किए किसी व्यक्ति विशेष से अपनी तुलना शुरू कर देते हैं और उसके पद चिन्हों पर चलने की कोशिश करने लगते हैं। कुछ समय पश्चात हम पूर्ण रूप से भूल जाते हैं कि हम हैं कौन और हमें कितनी ईश्वरीय शक्ति/ऊर्जा प्राप्त है। ये बात हमें, हमारे सही लक्ष्य निर्धारण में बाधा पहुंचाती है एवं हम, अपने माँ-बाप एवं अन्य सभी इंसानों की तरह भ्रमित हो जाते हैं।

जब लक्ष्य निर्धारण की शक्ति ही खो जाती है तब हम दूसरों के लक्ष्यों से अपने लक्ष्य निर्धारण करने लगते हैं। संसार में इतने खो जाते हैं कि फिर कभी लौटकर अपने अन्दर देखते ही नहीं। किसी ख़ास रिश्तेदार या अपने पड़ोसियों को देखकर आगे का लक्ष्य निर्धारण करना हमारी कमजोरी बन जाती है।

इस दुविधा की घड़ी में हम छोटे-छोटे लक्ष्यों का निर्धारण कर लेते हैं और समाज को कहते फिरते हैं कि हमने अपनी पूरी ऊर्जा इस लक्ष्य की प्राप्ति में झोंक दी। दरअसल यदि देखा जाए तो ये लक्ष्य ही इतना छोटा था कि इसमें हमारी शक्ति का सौंवा हिस्सा भी नहीं लगा। क्योंकि हमने न तो ये समझने की कोशिश की कि ये लक्ष्य मेरी क़ाबलियत के हिसाब से ठीक है या नहीं और न ही हमें ये खबर रही कि हमारे अन्दर कितना बड़ा ऊर्जा का श्रोत उपलब्ध है। इस दुविधा से हमें अगर लक्ष्य की प्राप्ति हो भी जाए तो ख़ुशी चार दिनों से ज्यादा नहीं टिकने वाली। फिर से हम किसी और छोटे लक्ष्य को पकड़ेंगे और एक बार फिर यही कहने लगेंगे कि हमने अपनी पूरी शक्ति झोंक दी।

यह कहना गलत नहीं होगा की इंसान को सबसे पहले ये जानने की जरुरत होती है कि उसकी ऊर्जा शक्ति है कितनी और उस शक्ति से वह क्या-क्या काम कर सकता है। आज के समय में यह देखा जाता है कि एक आई.आई.टी. स्नातक या एक भारतीय प्रशासनिक अधिकारी को बाजार

में वही काम मिलता है जिसमें उसने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जब उसे चयनित किया जाता है तो उस समय यह सुनिश्चित किया जाता है कि वह नियुक्ति के पहले से काम जानता है या नहीं। जब व्यक्ति कुशल है ही तो रोजमर्रा के काम में न तो उसे ज्यादा तकलीफ होगी और न ही अतिरिक्त ऊर्जा की जरुरत पड़ेगी। यही कारण है कि नियुक्ति के कुछ समय के अंतराल के पश्चात ही उसके चेहरे पर उदासी दिखने लगती है।

वास्तव में यह देखने के लिए कि हमारे अन्दर ऊर्जा शक्ति कितनी है, हमें वे काम करने ही नहीं चाहिए जिसमें हमें कौशल प्राप्त हो। हमें हमेशा नयी-नयी चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए। चुनौतियों को स्वीकार करते ही हमारे शरीर में जो ऊर्जा के श्रोत सूख गए हैं या जो ऊर्जा अनुपयोगी होकर गहरी निंद्रा में सो चुकी है वह फिर से जाग जाएगी और हमारे कदम एक नयी खुशियों की दुनियां में चलने का आनंद प्राप्त करेंगे।

एक आरामदायक काम, जिसमें हमें कौशल प्राप्त है, हमें एक अच्छा वेतन एवं बाहरी, दिखावटी सामाजिक ख़ुशी तो प्राप्त कर सकता है, लेकिन अंदर की ख़ुशी एवं चेतना-वर्धन के लिए हमें वही कार्य करने चाहिए जो हमारी ऊर्जा शक्ति के हिसाब से उपयुक्त हैं और जो कार्य अब तक किया ही न गया हो और उसे करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता हो। इसके लिए, अगर जरूरी हो, तो हमें किसी आध्यात्मिक व्यक्ति को अपना गुरु चुन लेना चाहिए और उसके माध्यम से यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि हमारे पास किस माप का ऊर्जा श्रोत उपलब्ध है।

♦♦♦

राष्ट्रीय व्यवहार के लिए हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

गैर-तकनीकी लेख

जल जीवन मिशन

- ओम प्रकाश शर्मा
हिंदी परामर्शकार

देश के कई इलाकों में आज भी लोगों को पानी लेने के लिए कई किलोमीटर पैदल चलकर जाना पड़ता है। इस समस्या का समाधान करने के लिए मोदी सरकार द्वारा वर्ष 2020-21 के बजट में "जल जीवन मिशन या हर घर जल योजना" का ऐलान किया गया था। इसका उद्देश्य देश के सभी घरों में पाइपलाइन से स्वच्छ पानी पहुंचाना है। केंद्र सरकार द्वारा इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को वर्ष 2024 तक प्राप्त करने की समय सीमा निर्धारित की गई है।

इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2024 तक सरकार द्वारा देश के ग्रामीण इलाकों में हर घर में पीने के पानी का कनेक्शन देकर पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जाएगा। घरों तक स्वच्छ पानी पहुंचाने के लिए आवश्यक संसाधनों का विकास किया जाएगा। इसके अंतर्गत जल संरक्षण जैसे विषयों पर काम किया जाएगा। इस योजना का कार्यान्वयन किए जाने के फलस्वरूप लोगों को घर पर ही पीने का स्वच्छ पानी उपलब्ध होगा और उन्हें, विशेषकर महिलाओं को पानी लेने के लिए घर से पैदल चलकर दूर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और पानी की समस्या से भी निजात मिल जाएगी।

यह उल्लेखनीय है कि अभी तक हमारे देश के 50 प्रतिशत घरों में ही पाइपलाइन द्वारा साफ पानी की आपूर्ति होती है। सरकार द्वारा अब इस योजना का दायरा बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। जिसके अंतर्गत हर घर नल, हर घर जल पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार द्वारा घोषणा की गई है कि इस योजना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह अपनी पूरी ताकत लगा देगी। इसके लिए साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। वर्ष 2020-21 के बजट में इसके लिए अपेक्षित राशि का आबंटन करने की घोषणा की गई थी।

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री के अनुसार हर घर नल, हर घर जल योजना को वर्ष 2050 की आवश्यकता के आंकलन को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा रहा है। उनका कथन है कि हमारे देश में वर्षा और अन्य संसाधनों से मिलने वाले जल का मात्र पांच प्रतिशत ही पेयजल में प्रयोग होता है। पानी की आवश्यकता और उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए वर्षा के जल का संचयन (वाटर हार्वेस्टिंग) जैसी योजनाओं को अपनाने के लिए जन साधारण में जागरूकता बढ़ाने

की आवश्यकता है। इसके लिए हम सभी को अपना सक्रिय योगदान देना चाहिए। “जल जीवन मिशन” का उद्देश्य इसको जन आंदोलन बनाना भी है, ताकि यह सबकी प्राथमिकता बन सके। पानी के संसाधनों का उचित उपयोग करने के साथ-साथ पानी की बर्बादी को रोकना भी नितांत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को गंभीर जल संकट का सामना न करना पड़े।

♦♦♦

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।"

- राहुल सांकृत्यायन

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।"

- श्यामसुंदर दास

व्यंग्य

तीसरी लहर के दर्शन को बेचैन आत्माएं

- अनिल कुमार
सचिव

डॉन का इंतज़ार भले ही ग्यारह मुल्कों की पुलिस कर रही थी, पर कोरोना की तीसरी लहर का इन्तजार विश्व के काफी सारे मुल्क कर रहे हैं। अपनी सरकार भी कमर कस रही है। उसके कमर कसने में विपक्ष भी सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। क्या आपको भी औरों की तरह तीसरी लहर का इंतज़ार है? पहली व दूसरी लहर में अगर आपका कोई विशेष योगदान नहीं रहा और इस दौरान आपके वास्तविक शुभचिंतको ने आप पर भांति-भांति के व्यंग-बाण चलाए, जिससे आप कुंठित हैं तो निराश मत होइए। इस कुंठा से बाहर निकलने का हल है तीसरी लहर।

आम लोगों से ही यह तीसरी लहर वजूद में आएगी। सबसे बड़ी बात यह है कि पहले जो गलतियां आपने की थी, उनको कतई न दोहराएं। पहले आप घर में ही दुबके पड़े रहे और परिचितों के उपहास के कारण बनते रहे। इस बार लक्ष्य पर अपना निशाना साधिए! अगर आपको अपना योगदान देना है, तो घर-घुस्सू बनने से कुछ लाभ नही होने वाला। आपको बेमतलब भी घर से निकलना होगा। कहीं भी निकल जाइए। पर सावधानी यह बरतनी है कि वह भीड़-भाड़ वाला इलाका हो। अगर अपने शहर में नहीं घूमना चाहते, तो कहीं बाहर निकल जाइए। किसी पर्यटन स्थल पर चले जाइए। अभी हाल ही में आपने कुल्लू-मनाली की तस्वीरें देखी ही होंगी। कैसे लोग तन-मन और धन से तीसरी लहर के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।

दूसरी सावधानी, कोशिश करें कि मास्क न पहनें। अगर बाहर पुलिस के जुर्माने का डर हो, तो अपने पास इसे रख सकते हैं। ज्यादातर लोग यही कर रहे हैं। रूमाल जैसा जेब में रख सकते हैं या मफलर या दुपट्टे जैसा मुंह पर लटका लीजिए। घर में कोई शादी या समारोह हो, तो सोने पर सुहागा। यह तो आपके पास वाजिब कारण है। लम्बा-चौड़ा कार्यक्रम बनाइए। ध्यान रखिए कि दूरदराज का रिश्तेदार भी छूटने न पाए। सरकार की गाइडलाइन आपके ठेंगे पर!

बस यही चंद उपाय हैं, जिनका सही उपयोग करने से सफलता चूमेगी आपके चरण और तीसरी लहर देगी दर्शन।

♦♦♦

गैर-तकनीकी लेख

हृदय-परिवर्तन

- संजय कुमार
पी.एस.एस.

एक राजा को राज भोगते काफी समय हो गया था। बाल भी सफ़ेद होने लगे थे। एक दिन उसने अपने दरबार में उत्सव रखा और अपने गुरुदेव एवं मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमन्त्रित किया। उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलाया गया। राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्रायें अपने गुरु जी को भी दीं, ताकि नर्तकी के अच्छे गीत व नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सकें। सारी रात नृत्य चलता रहा। ब्रह्म मुहूर्त की बेला आयी। नर्तकी ने देखा कि उसका तबले वाला ऊँघ रहा है, उसको जगाने के लिए नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा - "बहु बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिताई। एक पलक के कारने, ना कलंक लग जाए।" अब इस दोहे का अलग-अलग व्यक्तियों ने अपने अनुरुप अर्थ निकाला। तबले वाला सतर्क होकर बजाने लगा। जब यह बात गुरु जी ने सुनी। गुरु जी ने सारी मोहरें उस नर्तकी के सामने फैंक दीं। वही दोहा नर्तकी ने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नवलखा हार नर्तकी को भेंट कर दिया। उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के पुत्र युवराज ने अपना मुकट उतारकर नर्तकी को समर्पित कर दिया। नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - बस कर, एक दोहे से तुमने वेश्या होकर सबको लूट लिया है। जब यह बात राजा के गुरु ने सुनी तो गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरु जी कहने लगे... राजा ! इसको तू वेश्या मत कह, ये अब मेरी गुरु बन गयी है। इसने मेरी आँखें खोल दी हैं। यह कह रही है कि मैं सारी उम्र जंगलों में भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुज़रा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ, भाई ! मैं तो चला।

यह कहकर गुरु जी तो अपना कमण्डल उठाकर जंगल की ओर चल पड़े। राजा की लड़की ने कहा - पिता जी ! मैं जवान हो गयी हूँ। आप आँखें बन्द किए बैठे हैं, मेरी शादी नहीं कर रहे थे, मगर आज रात मैंने आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद कर लेना था। लेकिन इस नर्तकी ने मुझे सुमति दी है कि जल्दबाजी मत कर कभी तो तेरी शादी होगी ही। क्यों अपने पिता को कलंकित करने पर तुली है ? युवराज ने कहा - पिता जी ! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राजपाट नहीं सौंप रहे थे। मैंने आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना था। लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले! आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है, धैर्य रख। जब ये

सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया। राजा के मन में वैराग्य आ गया। राजा ने तुरन्त फैंसला लिया - क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ। फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - पुत्री! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं। तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रुप में चुन सकती हो। राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्याग कर जंगल में गुरु की शरण में चला गया। यह सब देखकर नर्तकी ने सोचा - मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, लेकिन मैं क्यों नहीं सुधर पायी ? उसी समय नर्तकी में भी वैराग्य आ गया। उसने उसी समय निर्णय लिया कि आज से मैं अपना बुरा धंधा बन्द करती हूँ और कहा कि हे प्रभु! मेरे पापों से मुझे क्षमा करना। बस, आज से मैं सिर्फ तेरा नाम सुमिरन करुँगी।

मित्रों... समझ आने की बात है, दुनिया बदलते देर नहीं लगती। एक दोहे की दो लाईनों से भी हृदय परिवर्तन हो सकता है। बस, केवल थोड़ा धैर्य रखकर चिन्तन करने की आवश्यकता है।
प्रशंसा से पिघंलना मत, आलोचना से उबलना मत, नि:स्वार्थ भाव से कर्म करते रहो, क्योंकि इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।

♦♦♦

अगर देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा यह मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कार्य कर सकते हैं- पिता, माता और गुरु।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कबीर दास जी के दोहे

- नीरू शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

अर्थः कबीर दास जी कहते हैं कि चलती चक्की देखकर उनकी आंखे नम हैं क्योंकि जैसे चलती चक्की के दो पाटो के बीच में आने से अनाज के दाने पीस जाते हैं, ठीक वैसे ही दो पक्षों, दो लोगों या दो समुदायों के बीच में होने वाले मतभेदों में पड़ने वाले को सिर्फ नुकसान ही उठाना पड़ता है।

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, दुःख काहे को होय।।

अर्थः कबीर दास जी कहते हैं कि दुःख में व्यक्ति हमेशा ईश्वर को याद करता है। सुख मिलते ही वह ईश्वर को भूल जाता है। कबीर जी मानते हैं कि जो ईश्वर को सुख में याद करते हैं उसको दुख हो ही नहीं सकता।

जाति न पूछे साधु की, पूछ लिजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।

अर्थः कबीर दास जी कहते हैं कि ज्ञानी की कोई जाति नहीं होती, उसका ज्ञान ही उसका धर्म है, इसलिए साधु को ठीक वैसे ही सिर्फ ज्ञान की बात पूछनी चाहिए जैसे तलवार खरीदते वक्त लोग सिर्फ तलवार की धार पर ध्यान देते हैं, क्योंकि तलवार की धार के सामने तलवार की म्यान महत्वहीन है।

यह तन काचा कुम्भ है, लिया फिरे था साथ।
ढबका लगा फुटि गया, कछु न आया हाथ।।

अर्थः कबीर दास जी कहते हैं कि आदमी का शरीर कांच के घड़े जैसा नाजुक है जो एक ठोकर लगते ही टूट कर बिखर सकता है और मोह माया धरी की धरी रह जाती है। मरने के बाद कोई कुछ साथ लेकर नहीं जाएगा।

श्रम ही से सब कुछ बने, बिन श्रम मिले ना काही।
सीधी उंगली घी जमो, कबसु निकले नाही।।

अर्थः कबीर दास जी कहते हैं कि दुनिया में मेहनत से सब कुछ मिलता है, मेहनत किए बिना कुछ नहीं मिलेगा। घी से भरा डिब्बा सामने रखा होने पर अगर उसमें से घी निकालना है तो उंगली टेढ़ी करने जैसा मामूली परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि सीधी उंगली से घी निकालना असंभव है।

♦♦♦

हिन्दी को अपनाने का फैसला केवल हिन्दी वालों ने ही नहीं किया। हिन्दी की आवाज पहले अहिन्दी प्रान्तों से उठी। स्वामी दयानंद, महात्मा गाँधी या बंगाल के नेता हिन्दी भाषी नहीं थे। हिन्दी हमारी आजादी के आंदोलन का एक कार्यक्रम बनी।

- अटल बिहारी वाजपेयी

गैर-तकनीकी लेख

डिजिटल स्ट्रेस से राहत देगा 20-5-3 का ये नियम

- अनिल कुमार
सचिव

टीवी, स्मार्टफोन, कंप्यूटर, टैब.... लगातार स्क्रीन पर समय बिताना हमारी शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए ठीक नहीं है। यह जानते हुए भी हम इन सब चीजों से दूर नहीं हो पा रहे हैं। फिर इस नुक्सान की भरपाई कैसे होगी? तो इसका जवाब है 20-5-3 का फार्मूला, जिसे वैज्ञानिकों ने "नेचर पिरामिड" का नाम दिया है।

दरअसल वैज्ञानिकों ने यह जादुई फार्मूला प्रकृति के लाभ उठाते हुए डिजिटल क्षेत्र से दूर रहकर चिंता व तनाव से निपटने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया है। कई महीनों से घर में रहने के दौरान हम में से कई लोगो को यह महसूस हुआ है कि बाहर निकलना मनोबल के लिए क्यों जरुरी है।

अब जबकि दुनिया के कई हिस्सों में लॉकडाउन में ढील दी जा रही है, तो क्यों न नेचर पिरामिड का तरीका आजमाएं, जो बाहरी हवा और प्रकृति के लाभों को बढ़ावा दें। यहां 20-5-3 का मतलब है 20 मिनट, 5 घंटे और 3 दिन। इसमें 20 का मतलब है कि रोजाना बीस मिनट किसी पार्क या वनस्पति वाली जगह पर बिताएं।

यह पहला दृष्टिकोण आपको सूर्य के संपर्क में लाकर विटामिन डी को ग्रहण करने और आपकी मानसिक सेहत में सुधार करने में मदद करेगा। और अगर आप यह काम अपने स्मार्टफोन के बिना कर सकते हैं, तो यह और भी बेहतर होगा।

फिर महीने में पांच घंटे जंगल या प्रकृति से जुड़ी जगह पर बिताने की कोशिश करें। सिल्वोथेरेपी के जानकारों की माने तो यह हमें मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्तर पर खुद को पुनः संतुलित करने की अनुमति देता है। (सिल्वोथेरेपी एक अभ्यास है जिसमें पेड़ों की ऊर्जा से जुड़कर मन और शरीर की स्वास्थ्य स्थिति को बढ़ाना शामिल है)

अंत में तीन संख्या है, यानि इतने दिनों के लिए आपको पूरी तरह से डिजिटल चीजों से दूर होना चाहिए। यह है साल में एक बार किया जाने वाला इलाज, जो डिजिटल तनाव से आपको राहत देने में बेहद कारगर होगा। अपने डिजिटल गैजेट्स से दूर रहने के दौरान यह अवधि खुद पर ध्यान केन्द्रित करने और खुद के क्रियाकलापों पर मनन-चिंतन में गुजारें। मानसिक शांति आएगी।

♦♦♦

गैर-तकनीकी लेख

स्वच्छ भारत अभियान

अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

स्वच्छ भारत अभियान क्या है?

स्वच्छ भारत अभियान भारतीय सरकार द्वारा चलाया जाने वाला एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान है। इस अभियान द्वारा भारत को गन्दगी-रहित बनाया जायेगा। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, पीने का साफ़ पानी हर घर तक पहुँचाना, ग्रामीण इलाकों में स्वछता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, सड़कों की सफाई करना और देश का नेतृत्व करने के लिए देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना शामिल है।

स्वच्छ भारत अभियान को **क्लीन इंडिया मिशन (Clean India Mission) या क्लीन इंडिया ड्राइव** भी कहा जाता है। स्वच्छ भारत का सपना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने देखा था। इस सन्दर्भ में गांधी जी ने कहा था कि "स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी है"। उनका ये कहना था कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शान्तिपूर्ण जीवन का अनिवार्य अंग हैं।

स्वच्छ भारत अभियान किसने शुरू की थी और कब की थी?

स्वच्छ भारत अभियान **2 अक्टूबर, 2014** को गाँधी जयंती के दिन भारत के **प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी** ने राजघाट, नयी दिल्ली में शुरू किया। इस अभियान की शुरुआत में मोदी जी ने भारत के दो सपूतों महात्मा गांधी जी और पूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को श्रधांजलि अर्पित की। गांधी जी के 147वें जन्म दिन पर मोदी जी ने गांधी जी द्वारा देखे गए सपने को साकार करना शुरू किया और 2 अक्टूबर 2019 (बापू के 150वें जन्म दिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया।

प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा कि भारत को स्वच्छ **बनाने** का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है, ये काम तो भारत माता की सभी संतानों द्वारा किया जाना है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आन्दोलन में तब्दील किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा की बापूजी के 150वें जन्म दिवस पर उनके लिए यही सर्वश्रेष्ट श्रधांजलि होगी।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य ओर दिशा निर्देश:

1. हर किसी को शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर के खुले में शौच को पूरी तरह समाप्त करना है।
2. बेकार के शौचालयों को फ्लशिंग शौचालय से परिवर्तित करना है।
3. मैन्युअल स्केवेंजिंग सिस्टम को समाप्त करना है।
4. गली मोहल्ले को साफ़ रखना है, ग्राम पंचायत के माध्यम से सभी ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित किया जाएगा। वर्ष 2019 तक सभी परिवारों में पानी की आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए गाँव में पाइप लाइन्स बिछाई जाएंगी।
5. उचित स्वच्छता उपयोग के लिए सार्वजनिक जागरुकता: इस मिशन का उद्देश्य लोगों के रवैये, मनोभावना और विचारों को बदलना है।
6. सभी अनुपयोगी चीजों को वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों की रीसाइक्लिंग के माध्यम से पुन: उपयोग लायक बनाना है।
7. ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना आवश्यक है। इसीलिए ये स्वास्थ्य शिक्षा जैसे जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों से प्रेरित करके स्थायी स्वच्छता को लाने के लिए किया गया है।
8. इसका उद्देश्य भारत को एक स्वच्छ, सुंदर और विकसित देश बनाना है।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए मैं क्या कर सकता हूँ :

नीचे हम कुछ उपायों का उल्लेख कर रहे हैं, जिसे अपनाकर हम स्वच्छता की ओर एक कदम और बढ़ा सकते हैं।

1. स्वच्छता की शुरुआत खुद से ही करनी चाहिए। इसलिए सबसे पहले तो मैं स्वयं खुद अपने आप को साफ़ सुथरा रखूँगा। जैसे कि मैं प्रतिदिन स्नान करूंगा, हर हफ्ते अपने बाल और नाखून साफ़ करूँगा और खाना खाने से पहले हाथ अवश्य साफ़ करूंगा। इन सब गुणों को अपनाने से और खुद को साफ सुथरा रखने से हम बीमारियों को अपने से दूर रख सकते हैं। इसलिए मैं खुद स्वच्छ रह कर दूसरों को भी स्वच्छ रहने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ।
2. मैं अपने घर के बड़ों को अवगत करा सकता हूँ कि घर में नियमित रूप से झाड़ू लगा कर, कूड़े कचरे को बाहर म्यूनिसिपलिटी द्वारा स्थापित किए गए कचरे के डिब्बे में डाल दें। खुले में इधर-उधर न फ़ेंक दें। घर की नाली को हम प्रतिदिन फिनैले या ब्लीचिंग पाउडर से

साफ़ कर सकते हैं, ताकि वहां मछर और मक्खियाँ आदि उत्पन्न न हों। ऐसा करने से हम बीमारियों से बच सकते हैं।

3. मैं सड़क पर कभी नहीं थूकूंगा और न ही नाक साफ़ करूँगा और न ही कोई कचरा सड़क पर फेंकूंगा और मैं अपने से छोटों को भी यही सीख दे सकूंगा कि हम अपने परिवेश को कैसे साफ़ रख सकते हैं।
4. मैं अपने गाँव के बुजुर्गों को शौचालयों का उपयोग करने और इसकी उपयोगिता के बारे में अवगत करा सकता हूँ।
5. मैं खुद वृक्ष रोपण कर सकता हूँ और दूसरों को भी करने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ ताकि हम एक हरा-भरा और सुंदर गाँव का निर्माण कर सकें। अगर हर व्यक्ति साल में कम से कम एक भी वृक्ष रोपण करता है तो सोचो साल भर में कितने पेड़ लगेंगे पूरे भारतवर्ष में। ये पेड़ हमें ऑक्सीजन देकर हमारे देश को हरा-भरा और सुंदर बनायेंगे।

निष्कर्ष

स्वच्छ भारत अभियान एक बहुत ही सराहनीय कदम है जिसके जरिये लोग स्वच्छता के महत्व को जान और समझ पाए हैं। यह प्रयास हमारे भारत को एक सुंदर, स्वच्छ और हरा-भरा देश बनाने में सहायक होगा। अभी भी हमारा देश पूरी तरह से स्वच्छ नहीं बना है पर अगर भारत का हर नागरिक इस सफाई अभियान को अपनी जिम्मेदारी मान कर अपनी कर्त्तव्य का निर्वहन करेगा तो ये मिशन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होगा और हमें आजादी दिलाने वाले हमारे प्रिय बापूजी (महात्मा गाँधी) का स्वच्छ भारत का सपना भी पूरा हो जाएगा।

♦♦♦

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिन्दी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।"

- नरेन्द्र मोदी

गैर-तकनीकी लेख

गलतफहमी

- भुबन दास
पी.एस.एस.

गलतफहमी शब्द से हम सभी लोग वाकिफ़ होंगे। हम सब अक्सर इसका शिकार होते हैं और पहले भी हुए होंगे। प्रिय पाठकों आप लोग जरुर आश्चर्य चकित हुए होंगे कि यह कैसा शीर्षक है? मैं इसका शिकार थोड़े दिन पहले ही हुआ हूँ, मेरी बहुत बड़ी गलतफहमी दूर हो गई, अब मैं बहुत खुश हूँ, इसलिए मैने मेरे साथ घटित हुई घटना को गलतफहमी का नाम दिया है। घटना इस प्रकार है, अप्रैल, 2021 को मैं अपनी दोनों पुत्रियां और पत्नी को गांव छोड़ने के लिए गया था, वहाँ जाने के बाद पता चला मेरे ससुरजी की तबीयत खराब है, इसलिए मैने हॉस्पिटल जाकर उनका हालचल जाना। इस दौरान मुझे शंका हुई कि कहीं उनको कोरोना तो नहीं हुआ? दो दिन बाद ससुर जी के साथ मैंने भी कोरोना परीक्षण करवाया। तो मेरी रिपोर्ट भी कोरोना पॉजिटिव आई। उसके बाद मैने डॉक्टर से परामर्श किया तो उन्होंने मुझसे घर में ही चिकित्सा कराने की सलाह दी और कुछ दवाई आदि भी दी। उसके बाद मैं अपने घर आ गया और अपने आपको एक कमरे में सीमित कर लिया और मेरी पत्नी ने मेरा पूरा ख्याल रखा। वह बिना डरे मेरी देख-भाल करती रही, इस दौरान मेरे ससुरजी का कोरोना की वजह से देहान्त हो गया था, जब से मेरे रिश्तेदारों को पता लगा कि मुझे कोरोना हुआ है, तब से सब लोगों ने हमसे दूरी बना ली, दूरी तो दूरी किसी ने फोन करके हाल-चाल तक नहीं जाना, और आस पड़ोस के सब लोगों ने घर के खिड़की-दरवाजा तक बन्द कर लिया था, अगर किसी को मैं दूर से भी दिख गया तो मुंह फेर के चला जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि मैं किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हूँ। मेरे कर्मस्थल में जो भी मुझे जानता था वह मेरा हाल-चाल पूछते और हौसला बढ़ाते जो कि मुझे अच्छा लगता था, और वे कहते थे कि अच्छा हुआ कि तू गांव चला गया, गाँव में तुझे सब लोग मदद करेंगे, दिल्ली में हालात बहुत खराब है, और मुझे भी ऐसा ही लगता था कि मेरे भाई-भतीजा, रिश्ते-नाते सब मेरा गाँव में ही हैं तो वे जरूर मदद करेंगे। पर कोरोना की वजह से मेरी बहुत बड़ी गलतफहमी दूर हो गई, मैं तो कोरोना को धन्यवाद दूंगा कि मुझे वास्तव में बहुत कुछ सीखने को मिला, लोगों का दुःख देखने के बाद मेरा विचलित होना स्वाभाविक ही था, और मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि हे भगवान! अब बहुत हुआ इस महामारी से सबको मुक्ति दिला दो।

मेरे ससुरजी को भी गलतफहमी इस कदर हॉवी थी कि उनको कभी कोरोना हो ही नहीं सकता, अगर हो भी जाए तो उनको कुछ नहीं होगा। पर ऐसा नही हो सका, यह उनकी गलतफहमी ही

थी, और मेरी गलतफहमी ऐसी थी कि शहर में ज्यादा भीड़-भाड़ है। यहां कभी भी किसी को भी कोरोना हो सकता है, अगर मैं गाँव चला जाता हूँ तो शायद हम बच सकते हैं, पर ऐसा नहीं हुआ। गांव जाने के बाद ही मुझे कोरोना हुआ है, जिनसे मुझे मदद की उम्मीद थी, उन्होंने ही मुझसे मुंह फेर लिया। यह भी मेरी गलतफहमी ही थी। ख़ैर, जिसका अंत भला तो सब भला, गलतफहमी जितनी जल्दी दूर हो जाए उतना ही सब के लिए अच्छा होता है। गलतफहमी कई तरह की होती है। मैं विषय को ज्यादा विस्तृत न करते हुए यह कहना चाहता हूँ कि आपस में बातचीत करके जितनी जल्दी हो सके गलतफहमी दूर कर लेनी चाहिए इससे सबका भला होता है।

♦♦♦

हमें तो हिन्दी भाषा को इस योग्य बना देना है कि वह साधारण से साधारण मजदूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवी के दिमाग में समान भाव से विहार सकें।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

गैर-तकनीकी लेख

भ्रष्टाचार का मूल

- अनिल कुमार
सचिव

लोग सोचते हैं कि पुराने जमाने में हिन्दुस्तान बहुत नैतिक देश था और सारे लोग ईमानदार थे। वह तो विदेशी आक्रमणों के कारण लोग पथभ्रष्ट होते चले गए। इसकी सच्चाई जानने के लिए लगभग 2300 साल पुराने कौटिल्य का अर्थशास्त्र पढ़िए। कौटिल्य के समय भी खूब भ्रष्टाचार था। वह मानव स्वभाव को बखूबी समझते थे। उन्होंने अर्थशास्त्र में चालीस प्रकार के भ्रष्टाचार बताए हैं। राज्य के अधिकारी राजस्व की वसूली के लिए इन तरीकों का इस्तेमाल करते थे। कौटिल्य ने लिखा है कि जैसे जीभ पर शहद या विष रख दिया जाए, तो उसका स्वाद लिए बिना कोई नहीं रह सकता, वैसे ही राजस्व अधिकारी धन का स्वाद न ले, यह असंभव है। पानी में तैरती मछली कितना पानी पी गई और अधिकारी कितना धन हजम कर गया, यह जानना मुश्किल है।

भ्रष्टाचार हर राज्य (देश) को कमजोर करता रहा है और इसके लिए कड़ी सजा दी जाती है, परन्तु चुराने की आदत नही जाती। दरअसल, आदमी का लोभ इसके लिए जिम्मेदार हैं। यह महत्वपूर्ण नहीं हैं कि उसके पास कितना धन हैं, असली बात हैं कि उसका ईमान कितना बड़ा है। इसलिए ओशो थोपी हुई नैतिकता के पक्ष में नहीं हैं। वह कहते हैं, भ्रष्टाचार तभी ख़त्म होगा, जब आदमी भीतर से संतुष्ट हो, उसे दिखाई दे कि धन के उपर भी कुछ बाते हैं, जो अधिक मूल्यवान हैं, जैसे प्रेम, शांति, आनंद। इनका मूल्य धन से कही अधिक हैं। आदमी के जीवन में ध्यान का उदय हो, तो धन की भूख कम हो जाती हैं। ध्यान से मिलने वाली संतुष्टि दरअसल उसने जानी ही नही है। ध्यान से आत्मा संतुष्ट हो जाए, तो धन के पीछे वह क्यों भागेगा।

♦♦♦

गैर-तकनीकी लेख

मानव के डर से मुक्ति

मणिकांत राय
एम.पी.एस.

मानव में कुछ कमियां स्वाभाविक हैं। इस अधूरेपन के अहसास के बिना त्रुटियों का निराकरण संभव नहीं होगा। यद्यपि अपूर्णता का अहसास दिल में धर जाना विकृति है। ऐसे में मानव में असुरक्षा की भावना पनपेगी और भय मुखर होगा। डर मानव की भीतरी कमजोरी का द्योतक है। लोकलाज, दुख और उम्र ढलने पर संभरण..... तथा देख-देख आदि की चिंता में डरते-डरते जीना कुछ मानव की नियति बन जाती है। जो जान लें कि मानव युगों-युगों से संसार के असंख्य मेहमानों में एक है, उसका मुख्य स्वरूप ईश्वरीय है और इसे एक दिन शरीर छोड़ देना हो तो वह प्रतिदिन तिल-तिल कर नहीं मरेगा। जो मानव किसी प्रकार का भय नहीं रखता जैसे नन्हा बालक सहज, प्रफुलित और आनंदित रहता है। सहज, उन्मुक्त और निर्भीक आचरण प्रकृति की योजना के अनुरूप है। मायावी सोच में उलझ कर मानव छल, कपट और स्वार्थ का सहारा लेता है। इससे उसके कर्म और आचरण पारदर्शी नहीं रहते। लिहाजा वह संकुचित, कुठित भयग्रस्त जीवन बिताने के लिए मजबूर हो जाता है। निश्छल अंतःकरण निर्भीकता और उत्साह का वास है। ऐसे मानव को भय नहीं होता कि लोग क्या कहेंगे। चुंकि उसके लिए लोक लाज से अधिक अंतरात्मा की आवाज सुनाई देती है। धन संपदा या प्रियजन के न रहने के भय से क्षुब्ध हो जाना दूरदर्शिता के अभाव को दर्शाता है।

जो दिन गया वह हमारा नहीं था। जो वास्तव में हमारा है वह पुनः हमारे पास आएगा। निर्भय व्यक्ति परिस्थिति के सामने घुटने नहीं टेकता। साहसी मानव भी भय मुक्त नहीं होता, किंतु अपने पौरूष को पहचानते हुए हौसले से वह डर को शिकस्त देता है। यह जानते हुए कि उन्नति का मार्ग डर की गलियों से गुजरता है, वह और अधिक निर्भीक रुप से प्रकट होता है।

♦♦♦

कविता

जिंदगी

राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

दुनियां का हर सख्स बेताब रहता है,
जिंदगी समझने का ख्वाब रहता है।

कभी लगता है जिंदगी धीमी बहुत है,
और कभी रफ्तार से भागे है जिंदगी।

किसी की जिंदगी दिन में सो जाती है,
किसी की रात में भी जागे है जिंदगी।

किसी के अगल बगल चलती है जिंदगी,
किसी के पीछे किसी के आगे है जिंदगी।

जितनी जिंदगियां उतने ही बखान यहाँ,
कोई खाया गया कोई खुश खाके जिंदगी।

अपनी अपनी शैली जिंदगी गुजारने के,
कोई शांत कोई काटता है गाके जिंदगी।

कोई खुद मार देता है अपनी जिंदगी को,
किसी का क़त्ल कर देती है आके जिंदगी।

कोई बिन बताए त्याग देता है जिंदगी,
किसी को त्याग जाती है बताके जिंदगी।

कोई सोचे जिंदगी कैसे पीछे छोड़ेगी मुझे,
कमजोर जिंदगी क्या तोड़ेगी मरोड़ेगी मुझे।

जिंदगी मर जाती जहाँ मेरे निशान होते हैं,
जिंदगी अपंग है हम उसके भगवान होते हैं।

जो मेरी थी अब आसपास न रही जिंदगी,
खेलने कूदने में बीती वही थी सही जिंदगी।

होश नहीं था पर सबकी आंखों के तारे थे,
शादी के बजाय अपनी मर्जी से कुंवारे थे।

जब सारी बस्ती से निहत्थे जीते थे हम,
दूध दही घी के बदले जाम पीते थे हम।

व जब जाते बिना किताब के पढ़ने हम,
शर्मिंदगी के बजाय लग जाते अकड़ने हम।

थप्पड़ खाकर भी लगता भूखे नहीं सोएंगे,
माँ बाप सिर पर हैं कहीं जाके क्यों रोयेंगे।

जिंदगी जानी जब बाबुल का साया न रहा,
मुंह में बोल आँख अश्क बकाया नहीं रहा।

भटकता हूँ गाँव-शहर कि कहीं तो मिलेगी,
सूखी हुई वो बगिया मेरी कभी तो खिलेगी।

वो जिंदगी जब हम खिलखिलाया करते थे,
महफ़िलों में खूब पिया-पिलाया करते थे।

बाबुल के रहते न माने ये आसान नहीं है,
अब जब भक्ति जागी तब भगवान नहीं है।

माँ बाप ऐसा बेइंतिहा प्यार कर बैठते हैं,
अपने ही बच्चों पर अत्याचार कर बैठते हैं।

जिंदगी मिले गहरे पानी में उतरने के बाद,
क्या मिली जो मिली बाबुल गुजरने के बाद।

खुशनसीब है वो जिसे मिली किसी बहाने से,
अभागे की जिंदगी आने जाने और खाने से।

छोटी छोटी चीजों को समझना है जिंदगी,
सुख-दुःख दोनों में हँसना-हँसाना है जिंदगी।

खुद का नहीं विश्व का कल्याण है जिंदगी,
अपनी कमाई से कुछ करना दान है जिंदगी।

क्या कितना बोलना समझ का नाम है जिंदगी,
विश्व कल्याण हेतु किया गया काम है जिंदगी।

महलों का सुख न झोपड़ी की व्यथा जिंदगी,
पल में राजा से रंक बनने की कथा जिंदगी।

सोचने-काटने वाले जिंदगी को दुआ कहते हैं,
जीने वाले इसे बंद कमरे का धुआं कहते हैं।

भूले बिसरे आदमी के लिए मजा है जिंदगी,
समझो जियो तो गुनाहों की सजा है जिंदगी।

कुछ मस्ती तो कुछ इसे गृहस्थी मानते हैं,
जिंदगी दुर्लभ है वे बेवजह सस्ती मानते हैं।

बल से पहले जमीन को हड़पना है जिंदगी,
इस कर्म के लिए बाद में तड़पना है जिंदगी।

जिंदगी कड़वा बिष है हर कोई पी नहीं सकता,
नासमझ काटता है समझदार जी नहीं सकता।

सोचो और काटो तो आकाश सी बड़ी है जिंदगी,
जियो तो हर पल मौत के आगे खड़ी है जिंदगी।

जो निभा न पाया माँ को दिया वचन है जिंदगी,
नम आँखों से पापा को ओड़ा कफ़न है जिंदगी।

मम्मी की गोद में बिताया व बचपन है जिंदगी,
बात-बात पर बाप से बंधता बंधन है जिंदगी।

जिंदगी बचपन है जो हँस खेल कट जाती है,
बाद में ख्वाब तो रहता है जिंदगी बट जाती है।

♦♦♦

संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो एकमात्र देवनागरी ही है।

- राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन

कविता

कोरोना काल में हिंदी

- नितेश जादोन
कार्यालय सहायक

कोरोना काल में हिंदी का उपयोग घटा है,
“दहशत” की जगह “पैनिक” शब्द आ डटा है।

वायरस देखकर हिंदी शब्दों की खपत घटी है,
अब हमारी बातचीत में विटामिन-सी, जिंक, रूटीन और इम्युनिटी है।

उधर “सकारात्मक” की जगह, “पॉजिटिव” शब्द ने हथियाई है,
इधर “नेगिटिव” होने पर भी ख़ुशी है, बधाई है।

अब जिंदगी में महत्वपूर्ण कार्य नहीं, “इम्पोर्टेन्ट टास्क” हैं,
हमारे नए आदर्श अब हैंडवाश, सैनेटाइजर और मास्क हैं।

हिंदी में अनेक शब्द अब सेल्फ क्वारटाइन हैं,
कुछ शब्द बेहद ग़मगीन हैं।

इस कोरोना काल में हमारे साथ,
हिंदी की शब्दावली भी डगमगाई है।

अब तो सिर्फ “काढ़ा” ही है,
जिसने हिंदी की जान बचाई है।

♦♦♦

कविता

क्योंकि अखबार तो अखबार होता है

- नीरू शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

किसी के घर की
किसी के दफ्तर की
किसी के दुकान की
किसी की लाइब्रेरी की
सुबह की जरूरत और आदत होता है
क्योंकि अखबार तो अखबार होता है।

यह सुनाएं लोगों के हाल
ये बनाए लोगों की चाल
ये समझाए दुनिया के जाल
ये बांटे ज्ञान
ये देश विदेश की जानकारी की किताब होता है
क्योंकि अखबार तो अखबार होता है।

कोई पढ़े जानकारी के लिए
कोई पढ़े नौकरी के लिए
कोई पढ़े रिश्तों के लिए
कोई पढ़े दिलकश इश्तिहार के लिए
कम पैसों में भरपूर लाभ देता है
क्योंकि अखबार तो अखबार होता है।

♦♦♦

कविता

जय जवान

- चंद्र मोहन
परियोजना सहायक

भारत माँ के वीर जवानों
तुमको शीश निभाते हैं,
देश की रक्षा की खातिर
जो जान की बाज़ी लगाते हैं।

देश प्रेम का जज़बा ही
रग-रग में तुम्हारी बसा हुआ,
परवाह न की अपने सुख की
सीमा प्रहरी बन डटा रहा।

शौर्य पराक्रम की गाथा
जन-जन के दिल में बसी हुई,
सत्य, निष्ठा और साहस की
एक नई इबारत लिखी हुई।

सुन जय हिंद की तेरी सिंह गर्जना
दुश्मन भी है थर-थर कांपे,
जब तान के सीना डट जाता
दुश्मन भी है डर कर भागे।

लेह की ऊँची चोटियों पर
अब तिरंगा भी फहराया है,
देकर खून का कतरा-कतरा
माटी का कर्ज़ चुकाया है।

♦♦♦

कविता

दोस्त दुश्मन

- राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

खरा मैं तेरी उम्मीदों पर, उतर भी कैसे सकता हूं,
तेरे ऐसे वैसे ख्वाब को पूरा, कर भी कैसे सकता हूं।

कुछ भी ऐसा नहीं किया जब, मेरे दादा बाप ने,
मैं अब तेरी खातिर व चीजें, कर भी कैसे सकता हूं।

लगी है बाजी जान की भी, सच का साथ निभाने में,
मैं झूठ के ऐसे दलदल में, उतर भी कैसे सकता हूं।

आदत है कदमों को मेरी, जब कांटों पर चलने की,
फूल बिछे इस रास्ते से मैं, गुजर भी कैसे सकता हूं।

हैं खड़े रहे खंजर के आगे, हम खुद्दारी की रक्षा को,
गद्दारी के इन तूफानों में, गुजर भी कैसे सकता हूं।

केवल एक सच ईमान ही है, जिसने मुझको पाला है,
घोंप मैं पीठ में इनकी अब, खंजर भी कैसे सकता हूं।

बुजुर्ग हमारे अडिग रहे, केवल खुदा का खौफ लिए,
मुट्ठीभर चोर डकैतों से, अब डर भी कैसे सकता हूं।

रोज मेरी दिल की बगिया ने, वफा के फूल खिलाए हैं,
छोड़ मैं अपने खेत को अब, बंजर भी कैसे कर सकता हूं।

एक कीड़ा हूं इस धरती का, यहां रेंग रहा हूँ बरसों से,
तेरी खातिर छूं मैं अब, अंबर भी कैसे सकता हूं।

दुनियाँ का एक फकीर हूँ मैं, रोटी है दीन ईमान मेरा,
अब इस उमर में घास हरी मैं, चर भी कैसे सकता हूं।

जिया है जी वन खुद्दारी का, मैंने दौलत नहीं बटोरी है,
गद्दारी का जिक्र यहां मैं, ठहर भी कैसे सकता हूं।

ऐसी दया है ऊपर वाले की, रोग नहीं है एक मुझे,
जान बूझ कर पी मैं अब, जहर भी कैसे सकता हूं।

मैंने अपने बड़ों से सीखा है, ये राह बदलना ठीक नहीं,
फिर लालच की इस दरिया में, उतर भी कैसे सकता हूं।

इस जीवन में मैंने झेला है, एक से एक तूफानों को,
एक तुझ जैसे तिनके से मैं, अब डर भी कैसे सकता हूं।

तेरी इन बातों ने दिल को, मेरे हैं गहरे जख्म दिए,
मुझे वक्त लगेगा अभी मैं इनको, भर भी कैसे सकता हूं।

अब तक सारे काम किए हैं मैने, पूछ के ऊपर वाले से,
अब जा के उसकी आंखों को मैं, अखर भी कैसे सकता हूं।

जब हुआ है अर्पण जीवन अपना, लोगों के कल्याण में,
छुपकर अब इन अपनों से हो, अमर भी कैसे सकता हूं।

कभी नहीं सिखाया चलना मुझको, मक्कारी की राहों में,
इस गद्दारों की बस्ती में कर, बसर भी कैसे सकता हूं।

है जब तक भी धड़कन सीने में, मेरी मंजिल वही बुलंदी है,
मैं जानबूझ कर अपने परों को, कतर भी कैसे सकता हूं।

है अपने कुल की पहचान यहां, त्यागों से बलिदानों से,
मैं अपनी ये लालच की थैली, फिर भर भी कैसे सकता हूं।

खड़ा रहा हूं शीश उठा के, आंख झुकी नहीं पल भर को,
ले के इतने बड़े इल्जाम को सिर पे, मर भी कैसे सकता हूं।

♦♦♦

कविता

झाँसी की मर्दानी वो झाँसी की रानी

- बबिता
प्रधान तकनीकी अधिकारी

वाराणसी में जन्मी वो अद्भुत मर्दानी थी,
बिन माँ बाप की संतान मनु बड़ी सयानी थी,
घुड़सवारी और तीरंदाज़ी करने की आदी थी,
वो झाँसी की रानी थी।

राजा गंगाधर राव की अर्धांग्नी, लक्ष्मीबाई कहलाने वाली थी,
दामोदर राव को जन्म देकर उसने झाँसी में फैलाई खुशहाली थी,
वो झाँसी की रानी थी।

पति के चले जाने के बाद गद्दी उसने संभाली थी,
अपना बच्चा खो कर भी उसने हार न मानी थी।
दत्तक पुत्र को लेकर वो आगे बढ़ने वाली थी,
अंग्रेज़ो की गुलामी न स्वीकारने वाली स्वाभिमानी थी।
वो झाँसी की रानी थी।

अपनी झाँसी नहीं दूँगी की गर्जना करने वाली थी,
बिजली बनकर दुश्मन पर बरसने वाली थी।
ऐसी बुंदेलों की महारानी थी,
वो झाँसी की रानी थी।

कमल और रोटी बाँट सेना और शस्त्रों की हो रही तैयारी थी,
सन सत्तावन में महा ग़दर की बिगुल बजाने वाली थी।
दुनिया को नारी शक्ति का फिर आभास कराने करने वाली थी,
नारी सेना बना, दुश्मन को ललकारी थी,
वो झाँसी की रानी थी।

ग्वालियर में जा कर लड़ी थी, वहाँ की सेना साथ खड़ी थी,
किन्तु वो विश्वासघात की मारी थी।
अंग्रेज़ों के हाथ न आई, आत्मदाह कर वीरगति पाने वाली थी,
वो झाँसी की रानी थी।

सबको हिम्मत देने वाली साहसी, वो नारी थी,
कभी हार न माने जो योद्धा, ऐसी वो प्रभावशाली थी,
दुश्मन पर भी छाप छोड़ गयी ऐसी वो मर्दानी थी।

इतिहास को नई दिशा दे,
भविष्य को प्रेरित करने वाली, दुर्गा स्वरूपी देवी,
वो झाँसी की रानी थी, वो झाँसी की रानी थी।

♦♦♦

इंतजार करने वालों को उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कविता

एक सुबह होगी

- नवीन चन्द्र
पी.एस.एस.

जब लोगों के कंधों पर आक्सीजन सिलेंडर नहीं, दफ्तर का बैग होगा।
गली में एम्बुलेंस नहीं, स्कूल की वैन होगी।
भीड़ दवाखानों पर नहीं,चाय की दुकानों पर होगी।
एक सुबह होगी।
जब पेपर के साथ पापा को 'काढ़ा' नहीं, चाय मिलेगी।
दादा जी बाहर निकलकर वेखौफ़ पार्क में गोते खाएंगे।
और दादी जी टेरेस पर नहीं, मंदिर में जल चढ़ाकर आएंगी।
एक सुबह होगी।
जब हाथों में कैरन और लूडो नहीं, बैट और बाल होगा।
मैदानों में सन्नाटा नहीं शोर का भार होगा।
शहरों की सारी पाबंदियां हटेंगी और फिर से त्योहार होगा।
एक सुबह होगी।
जब जी भर के सबको गले लगाएंगे,
कड़वी यादों को दफन कर फिर से मुस्कराएँगे।
और दुनियां को कह देंगे नज़रें झुका लो, हम फिर से वापस आए हैं।

♦♦♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कविता

मेरी नन्ही परी मेरी प्यारी सी बेटी

- आजाद अली
अटेंडेंट

अपनी मीठी सी बातों में हमको लुभा लेती है,
अपनी मीठी सी बातों में उलझा लेती है,
हमको मेरी नन्ही परी।

रोज सुबह नींद से जगा देती है
हमको मेरी नन्ही परी।

अपने पापा की राज कुमारी है,
मम्मी की दुलारी है,
मेरी नन्ही परी।

मेरे आंगन की आन बान
और शान है
मेरी नन्ही परी।

सबके दिलों की जान है,
मेरी प्यारी सी मुस्कान है,
मेरी नन्ही परी।

क्या किसी के पास है,
मेरी जैसी नन्ही परी ?

बेटियां देश की शान हैं,
और बेटियों से हर घर में मुस्कान है,
बिना बेटियों के अधूरा ये जहान है।

♦♦♦

कविता

शिलालेख हो तुम

- मनजीत कुमार
परियोजना अभियंता

शिलालेख हो तुम, कागज़ का टुकड़ा न जानो,
सत्य पताका तुम साधे, पानी से डगना तुम न जानो।

रद्दी होना तकदीर जिनकी, जिसने सिर्फ झूठे तथ्य जाने हैं,
सदियों की साक्षी हो तुम, कागज़ सा धुंधलाना तुम न जानो।

ऋतुओं की हलचल से न, पत्ते सा लहराना न जानो,
सूर्य के थोड़े से ताप, जलना बिखर न जानो।

शिलालेख हो तुम हर अक्षर ठोकर से सींचे हो,
तुम कर्मभूमि के नायक, किस्मत की लखीरों को क्या मानो।

वक़्त के थोड़े सख्त हाथों से, तथ्य बदल सब जाते हैं,
झूठों के मत से कुछ, कुछ झूठ हक़ीक़त बन जाते हैं।

तुम सत्य हो, तुम अलख, बदलना मिटना क्या जानो,
शिलालेख हो तुम, कागज़ का टुकड़ा न जानो।

शिलालेख हो तुम, कागज़ का टुकड़ा न जानो,
सत्य पताका तुम साधे, पानी से डगना तुम न जानो।

♦♦♦

कविता

प्यारे बादल

- सईद अनवर जमाल अंसारी
प्रोजेक्ट तकनीशियन

नीले बादल काले बादल,
कुछ तो है चमकीले बादल।
लंबे पतले और हैं मोटे,
आसमान में छाए बादल।
उमड़ घुमड़ के दूर-दूर से
पानी भरकर लाए बादल।
मनमौजी झबरीले बादल,
मन के पंछी श्याम सलोने।
दुनिया को हरसाए बादल,
जब देखूं मैं आसमान में।
दिल को बहुत लुभाए बादल,
प्यारे और सलोने बादल।
दूर देश से धूम धूम के
अपने देश में आए बादल।

♦♦♦

धैर्य एक कड़वे पौधे की तरह होता है, लेकिन इससे मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

व्यंग्य

काम आए केवल सरकारी

- ओम प्रकाश शर्मा
हिंदी परामर्शकार

कहने वाले कहते रहे, निकम्मे हैं सरकारी,
आज इस विकट दौर में, काम आए केवल सरकारी।

कोई न आते पास मरीज के, दवा पिलाते सरकारी,
कोई न इनको हाथ लगाते, सेवा में लगे हैं सरकारी।

कोई न इनको रोक पाते, पत्थर खाते सरकारी,
चौराहों पर चौबीसों घंटे, पाठ पढ़ाते सरकारी।

स्कूलों में बारातियों सी, खातिर करते सरकारी,
छोड़ परिवार डटे हुए हैं, कर्तव्य पथ पर सरकारी।

या फिर बच्चों के संग, ड्यूटी पर मां सरकारी,
नेताओं ने नाम कमाया, देकर धन सरकारी।

अपनी कमाई का हिस्सा दें, बिना नाम के सरकारी,
घर पर रहने की विनती करते, गाना गा कर सरकारी।

घर-घर जो सर्वे करते, वो बन्दे सारे सरकारी।
नुकसान तो सबका है, पर कफन मौत का सर लिए बैठे,
निकम्में सारे सरकारी।

♦♦♦

कविता

आजादी का अमृत महोत्सव

- अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

महोत्सव है यह आज़ादी का
पीता हर भारतवासी घूंट अमृत का।

शहीदों ने जान गंवाया,
दुश्मनों को पानी पिलाया।

मातृभूमि की रक्षा के लिए,
दिया ईंट का जवाब पत्थर से।

देश को मुक्त कराया,
अंग्रेजों के चंगुल से।

सलामी देगा भारत उनको,
दिलाई जिन्होंने आज़ादी हम को।

♦♦♦

यदि आप दूसरों की मदद कर सकते हैं, तो अवश्य करें. यदि नहीं कर सकते तो कम से कम उन्हे नुकसान न पहुंचाएं।

- दलाई लामा

शायरी

ये जिंदगी

- आजाद अली
अटेंडेंट

ये जिंदगी तू जाने किस मोड़ पर ले लाई हमें,
कभी हम खुद को तो कभी तेरे बारे में सोचते हैं।

जो हम कल थे वो आज नहीं हैं,
जो आज है वो कल नहीं होंगे,
जाने शायद फिर जिंदगी के ये पल नहीं होगें।

उजाला है जिन घरों में उनसे कोई रस्क नहीं,
पर अपने घर में एक टिमटिमाता हुआ दीपक तो होता।

जिनके घर आईना नहीं होता,
उनको अपना पता नहीं होता।

फिर खुदा को याद करते हैं,
जब कोई और आसरा नहीं होता।

♦♦♦

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

- विलियम केरी

कविता

सैनिक की दास्तां

- जार्ज एस. स्काईपेक
(हिंदी अनुवाद: ओम प्रकाश शर्मा,
हिंदी परामर्शकार)

मैं ऐसा था, जैसा दूसरे बनना नहीं चाहते थे,
मैं वहां गया, जहां अन्य जाना नहीं चाहते थे।

मैने ऐसा किया, जिसे अन्य करने में असफल हुए,
जिन्होंने कुछ नहीं दिया, मैने उनसे कुछ नहीं लिया।

और न चाहते हुए भी मैने अनंत
अकेलेपन की जिंदगी को स्वीकार किया,
तो क्या मैं जीवन में असफल हुआ?

मैने आतंक का चेहरा पास से देखा है,
डर की ठंडी चुभन को महसूस किया है,
प्यार के मधुर पलों का आनंद लिया है।

मैं रोया, दुखी हुआ और उम्मीद की कि,
अधिकांश जिनके साथ मैने समय व्यतीत किया,
वे कहेंगे कि अगर इसे भूल जाएं तो बेहतर होगा।

अंतत: किसी दिन मैं, यह कह पाऊंगा,
कि मुझे गर्व है कि मैं एक "सैनिक" था।

♦♦♦

सी-डैक, नोएडा में राजभाषा कार्यान्वयन : एक रिपोर्ट

- नवीन चन्द्र
पी.एस.एस.

हिन्दी में एक कहावत है "जहां चाह वहां राह" इसी कथन को सार्थक करता है सी-डैक, नोएडा केंद्र द्वारा कार्यालयीन कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग। यह उल्लेखनीय है कि सी-डैक, नोएडा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक वैज्ञानिक संस्था है, वैसे तो इस केंद्र में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रारंभ से ही कार्यालयीन कार्य में बढ़ावा दिया जाता रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान सभी श्रेणियों के अधिकारियों और कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों से इसमें उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विगत वर्षों के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में इस केंद्र द्वारा किये गए उल्लेखनीय कार्यों एवं अर्जित उपलब्धियों का विवरण निम्न प्रकार से है:

1. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के आदेशों के अनुसार सी-डैक, नोएडा में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। इस समिति की बैठकों का नियमित अन्तराल पर आयोजन किया जाता है। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्राप्त लक्ष्यों की समीक्षा की जाती है और जिन लक्ष्यों को अभी प्राप्त नहीं किया जा सका है, उनकी प्राप्ति में आ रही बाधाओं पर चर्चा करके उनका समाधान करने के प्रयास किए जाते हैं।
2. इस केन्द्र के विभिन्न प्रभागों में किए गए कार्यों का समेकन करके तिमाही हिन्दी प्रगति रिपोर्ट तैयार करके सी-डैक कॉर्पोरेट पुणे, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को प्रेषित की जाती है।
3. राजभाषा के प्रगामी प्रयोग से संबंधित छमाही रिपोर्ट नियमित रूप से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा को प्रेषित की जाती है।
4. इस केंद्र के कार्यकारी निदेशक और हिन्दी अधिकारी द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता है और बैठक में लिए गए निर्णयों को इस केंद्र में कार्यान्वित किया जाता है।
5. राजभाषा अधिनियम,1963 व राजभाषा नियम 1976 के प्रावधानों के अंतर्गत जारी विभिन्न आदेशों का कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाता है।

6. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा नियम-1976 के नियम 10(4) के प्रावधानों के अनुसार इस केन्द्र को अधिसूचित किया गया है।
7. हिन्दी प्रशिक्षण रोस्टर का अद्यतन रख-रखाव किया गया है। तदनुसार हिंदी प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों को समय-समय पर नामित करके प्रशिक्षित कराया जाता है।
8. हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। जिसके दौरान विभिन्न प्रभागों के साथ परस्पर चर्चा करके हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाते हैं।
9. हिन्दी टंकण में सुविधा के लिए कर्मचारियों के डेस्कटॉप और लैपटॉप में यूनिकोड फॉण्ट इंस्टाल किया गया है।
10. कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग की झिझक को दूर करने के लिए इस केन्द्र में समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करके कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे कार्यालयीन कार्य सुगमतापूर्वक हिंदी में निष्पादित कर सकें.
11. इस केन्द्र में हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन संबंधी प्रोत्साहन योजना लागू की गई है और समय-समय पर कर्मचारियों को इसमें प्रतिभागिता करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
12. नेमी (रूटीन) प्रयोग के पत्रों के हिन्दी पारूप तैयार करके संबंधित प्रभागों को प्रयोग के लिए उपलब्ध कराए गए हैं।
13. नराकास नोएडा के संयोजन से सी-डैक, नोएडा के कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी प्रतिभा पुरस्कार योजना लागू की गई है।
14. प्रति वर्ष सितम्बर माह के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। इस दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित करके विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।
15. वर्ष 2009 से हिन्दी पखवाड़े के अवसर परनियमित रूप से इस केन्द्र की वार्षिक गृह पत्रिका “अभिव्यक्ति” का प्रकाशन किया जा रहा है। अब इस पत्रिका के 13 अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं।
16. कार्यालय आदेश, विज्ञापन और निविदा सूचनाएं द्विभाषी रूप में जारी की जाती हैं।
17. हिन्दी पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में भेजा जाता है।
18. अधिकतम मूल पत्राचार हिन्दी में करने के प्रयास किए जाते हैं।
19. कार्यालय परिसर में सभी बोर्ड एवं सूचना पट्ट द्विभाषी प्रदर्शित किए गए हैं।
20. वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार पुस्तकालय के लिए पुस्तकों की खरीद हेतु आवंटित राशि में से 50 प्रतिशत राशि हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर व्यय की जाती है।
21. इस केन्द्र द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले सभी मानक फॉर्म द्विभाषी में उपलब्ध हैं।

22. इस केन्द्र में हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन प्रोत्साहन योजना लागू की गई है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को निरंतर बढ़ावा देने के प्रयासों की समय-समय पर विभिन्न निरीक्षण प्राधिकारियों द्वारा प्रशंसा की गई है। वर्ष 2019-20 के दौरान राजभाषा कार्यान्वन के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा द्वारा इस केन्द्र को राजभाषा शील्ड और प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया है।

♦♦♦

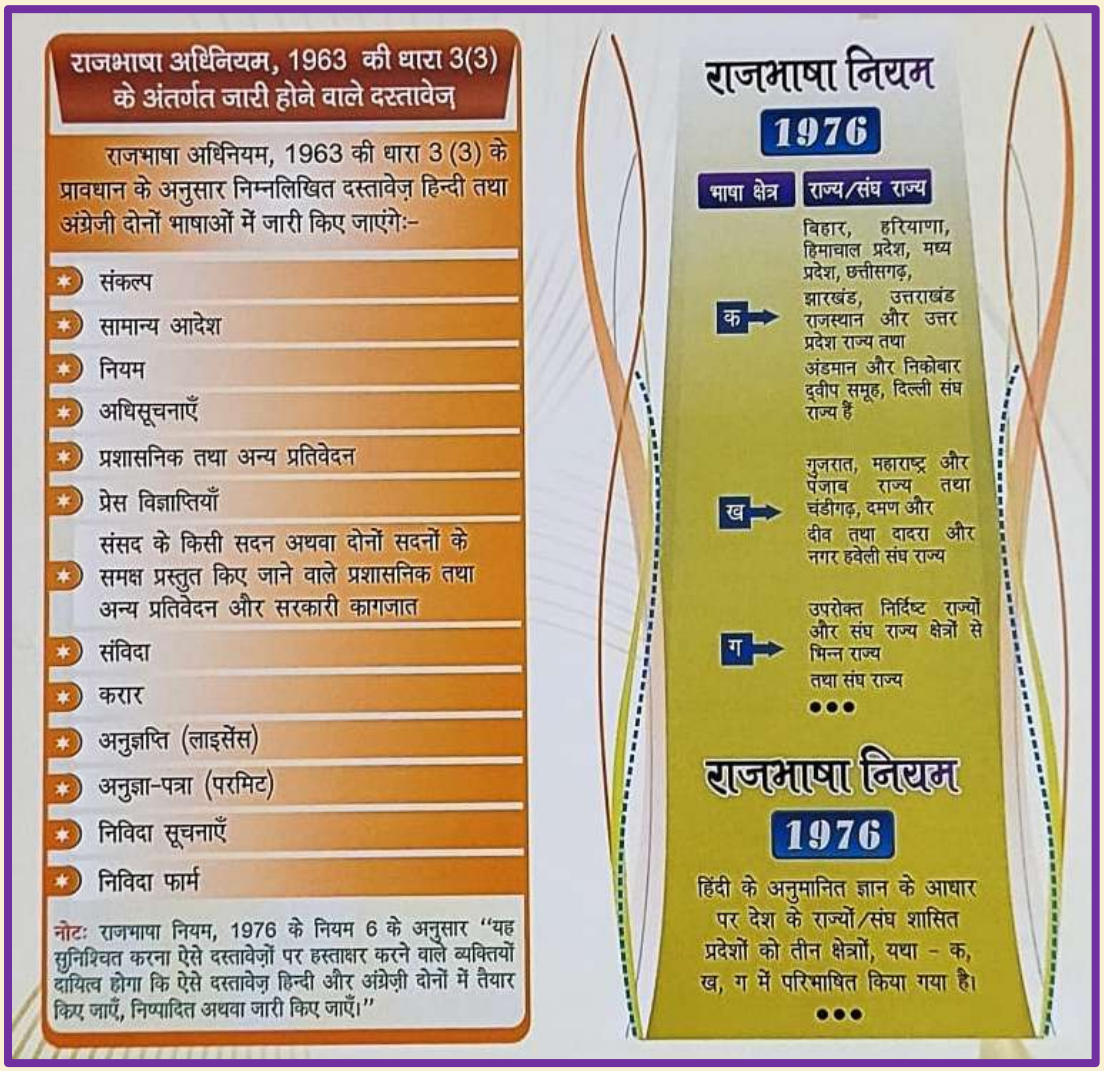

चित्र दीर्घा

श्री ए. सेल्वा कुमार, निदेशक (प्रशासन एवं सर्तकता), भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा नराकास, नोएडा की ओर से श्री ओम प्रकाश शर्मा, हिन्दी परामर्शकार, सी-डैक, नोएडा को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए।

श्रद्धांजली

डॉ. नेहा बाजपेयी

श्री अजय पाल

श्री राम सुमेर सरोज

रचनाकारः अमिय मोहंती

प्रगत संगणन विकास केंद्र